www.thearyasamaj.org

युगप्रवर्तक महर्षि दयानन्द

।।ओ३म्।।

।।कृण्वन्तो विश्वमार्यम्।।

वेद प्रतिपादित मानवीय मूल्यों को
जन-जन तक पहुँचाने हेतु कार्यतत्पर
सशक्त एवं समर्थ प्रान्तीय आर्य संगठन

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा का

मासिक मुखपत्र

वैदिक गर्जना

वर्ष १७ अंक १ १० जनवरी २०१७

भारतीय पत्रकारिता के जनक

पत्रमहर्षि बालशास्त्री जाम्भेकर को नमन !

www.thearyasamaj.org

चिल्ले गौरव राज्यस्तरीय अंतरमहाविद्यालयीन वक्तृत्त्व स्पर्धा के विजेता स्पर्धकों के साथ आर्य समाज सोलापुर के पदाधिकारी एवं परीक्षक ।

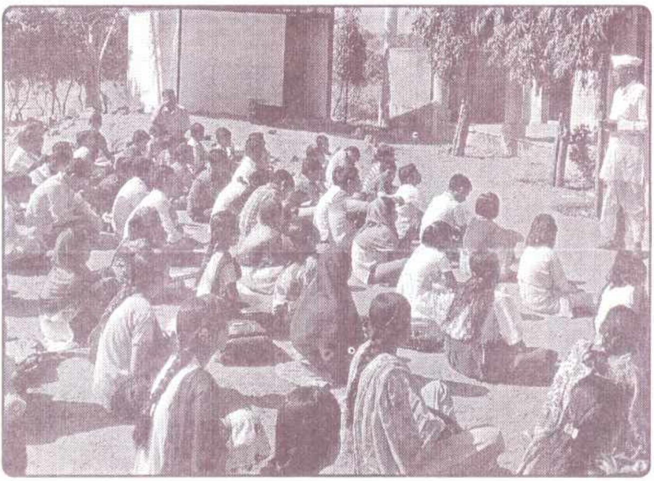

सभा द्वारा आयोजित 'मानव निर्माण अभियान' अंतर्गत स्कूली बच्चों को मार्गदर्शन करते हुए श्री लक्ष्मणराव आर्य गुरुजी ।

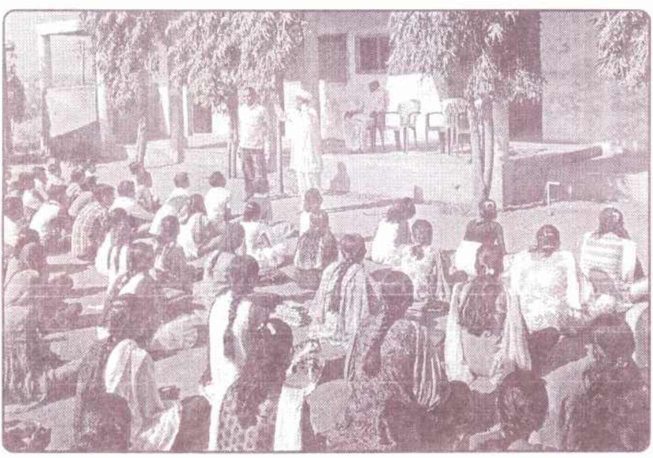

छात्रों के सम्मुख भजन प्रस्तुत करते हुए सभा के भजनोपदेशक पं.प्रतापसिंहजी चौहान।

www.thearyasamaj.org

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा का
मासिक मुखपत्र

वैदिक गर्जना

सृष्टि सम्वत् १,९६,०८,५३,११७ कलि संवत् ५११७ विक्रम संवत् २०७३
दयानन्दाब्द १९३ पौष १० जनवरी २०१७

प्रधान सम्पादक	मार्गदर्शक सम्पादक	सम्पादक
माधव के.देशपांडे	डॉ.ब्रह्ममुनि	डॉ.नयनकुमार आचार्य
(९८२२[illegible])	(९४२१९५११९०४)	(९४२०३३०१७८)

[illegible] - डॉ.[illegible] कुमार, प्रा.ओमप्रकाश होलीकर,
डॉ.[illegible] पाठक, [illegible]कुमार आर्य

अनुक्रम

हिन्दी विभाग

१) सम्पादकीय ५
२) मूर्तिपूजा का इतिहास ७
३) सुभाषित दर्शन ११
४) डॉ.धर्मवीरजी का बलिदान १२
५) जागृत भारत माता की तस्वीर (काव्य) १३
६) म.बसवेश्वर और म.दयानन्द १६
७) सभा के उपक्रम १८

मराठी विभाग

१) उपनिषद संदेश/दयानंद वाणी १९
२) वेदांची चित्रे वेदाभ्यासकांना तारतील काय ? २०
३) काव्यातून बोलाचा मार्मिक उपदेश २४
४) गुंजोटी-वेदप्रकाश बलिदान उत्सव-वृत्तांत २७
५) स्मरण महर्षि जांभेकरांचे २९
६) वार्ताविशेष ३०
७) शोकवार्ता ३४

*** प्रकाशक ***
मन्त्री, महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा,
सम्पर्क कार्यालय-आर्य समाज,
परली-वैजनाथ ४३१५१५

*** मुद्रक ***
वैदिक प्रिन्टर्स
महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा
आर्य समाज, परळी-वै.

वैदिक गर्जना के शुल्क
वार्षिक रु.१००/-
आजीवन रु.१०००/-

इस मासिक पत्रिका में प्रकाशित लेखों तथा विचारों से सम्पादक मण्डल सहमत हो, यह अनिवार्य नहीं है। किसी भी विवाद की परिस्थिति में न्यायक्षेत्र परली-वैजनाथ जि.बीड ही होगा।

श्रुतिसुगंध

पत्ते के तुल्य चंचल जीवन

अश्वत्थे वो निषदनं पर्णे वो वसतिष्कृता।

गोभाजऽइत्किलासथ यत्सनवथ पूरूषम्।। (यजु.३५/४)

पदार्थान्वय– हे जीवो ! जिस जगदीश्वर ने **(अश्वत्थे)** कल ठहरेगा वा नहीं ऐसे अनित्य संसार में **(वः)** तुम लोगों की **(निषदनम्)** स्थिति की **(पर्णे)** पत्ते के तुल्य चंचल जीवन में **(वः)** तुम्हारा**(वसतिः)** निवास**(कृता)** किया **(यत्)** जिस**(पुरुषम्)** सर्वत्र परिपूर्ण परमात्मा को**(किल)** ही**(सनवथ)** सेवन करो, उसके साथ **(गोभाजः)** पृथिवी, वाणी इन्द्रिय वा किरणों का सेवन करनेवाले **(इत्)** ही तुम लोग प्रयत्न के साथ धर्म में स्थिर **(असथ)** होवो।

भावार्थ – मनुष्यों को चाहिये कि अनित्य संसार में अनित्य शरीरों और पदार्थों को प्राप्त हो के क्षणभंगुर जीवन में धर्माचरण के साथ नित्य परमात्मा की उपासना कर आत्मा और परमात्मा के संयोग से उत्पन्न हुए नित्य सुख को प्राप्त हो । **(महर्षि दयानंद कृत यजुर्वेद भाष्य से साभार)**

आर्य समाज परली-वै. एवं दोडिया परिवार के सौजन्य से

-: महर्षि दयानन्द जन्मोत्सव व ऋषि बोधोत्सव :-

दि.२२ से २६ फरवरी २०१७ - सस्नेह निमन्त्रण

सभी आर्यजनों को सूचित करते हुए अपार हर्ष हो रहा है कि, आर्य समाज परली-वैजनाथ एवं दोडिया परिवार(परली) के संयुक्त तत्वावधान में आगामी २२से २६ फरवरी २०१७ को महर्षि दयानन्द का जन्मदिवस एवं ऋषि बोधोत्सव उत्साहपूर्वक मनाया जा रहा है । इस उपलक्ष्य में विद्वानों के भजन एवं प्रवचन तथा अन्य कार्यक्रम भी सम्पन्न होंगे । समारोह में निम्नांकित विद्वान व भजनोपदेशक पधार रहे हैं ।

* **मा.आचार्य श्री आनन्दजी पुरुषार्थी**(वैदिक प्रवक्ता, होशंगाबाद-म.प्र.)
* **मा.पं.श्री अजय आर्य** (आर्य भजनोपदेशक, मेरठ-उ.प्र.)

अत: इस समारोह में सभी आर्यजन अवश्य पधारें । पधारनेवालों की भोजन व निवास की व्यवस्था की गयी है। **– मंत्री आर्य समाज, परली-वै.**

संपादकीयम् मोदीजी का अर्थशुद्धि यज्ञ...

राष्ट्रहित में राजा व प्रजा दोनों को कष्ट झेलने पडतें हैं। देश की बाह्य व आंतरिक सुरक्षा को दृढ बनाने तथा राष्ट्र को सामाजिक व आर्थिक दृष्टि से मजबूती दिलाने में सभी देशवासी यदि कृतसंकल्प रहें, तो निश्चय ही वह देश स्वयंपूर्ण व शक्तिशाली बनने में विलम्ब नहीं लगता। इसलिए सर्वाधिक आवश्यकता होती है सामूहिक इच्छाशक्ति की!

देश के प्रधानमन्त्री श्री नरेन्द्र मोदीजी ने पहले पाकिस्तान के भीतर आतंकी शिविरों पर अपनी सेनाद्वारा जोरदार सर्जिकल स्ट्राइक किया और बाद में देश के भीतर छिपे काले धन व भ्रष्टाचार पर रोक लगाने के लिए **'नई अर्थक्रान्ति'** का ऐलान किया। दीपावली के कुछ ही दिनों बाद ८ नवम्बर की रात्रि में अचानक से मोदीजी ने ५०० व १००० रुपयों की नोटों पर पाबन्दी लगाने की घोषणा की और सारे देश खलबली मच गयी। उनकी नोटबन्दी की घोषणा से भ्रष्ट मार्ग से काला धन इकट्ठा करनेवालों की निन्द हराम हो गयी और फिर शुरु हुआ विरोधी दलों का हंगामा ! जनता को होनेवाली त्रासदी से बेचारे विरोधियों की चिन्ताएं इतनी बढने लगी कि मानों आज तक गरीबों व सामान्यों के रखवालदार एकमात्र वे ही रहे हो ! वस्तुतः बैंको के सामने लगनेवाली लम्बी कतारों में खडे रहकर साधारण लोगों को काफी तकलीफें उठानी पडी हैं, लेकिन कष्टों को सहने के बावजूद भी उनकी आस्थाएं नोटबन्दी के पक्ष में ही रही और दिक्कतों को सहने पर भी मोदीजी के इस कदम को लोगों ने काफी सराहा। यहाँ तक कि मुम्बई हायकोर्ट ने भी सरकार के इस निर्णय का समर्थन कर काले धन से देश में चलनेवाली समानान्तर अर्थव्यवस्था से राष्ट्र को बचाने हेतु सबको सरकार का साथ देने का आवाहन किया था।

शास्त्रों में कहा है - **'आत्मार्थे पृथिवीं त्यजेद्।'** आत्मकल्याण हेतु पृथ्वी का भी त्याग करना पडे, तो कोई बात नहीं ! हमें देश की भलाई के लिए 'स्व' को त्यागना पडता है। मोदीजी के फैसले से उनकी सरकार वा सत्ताधारी पार्टी का हित थोडे ही था, उनके इस ऐतिहासिक निर्णय में देश में 'भ्रष्टाचार' रुप नासूर बनते बडे घाव की मूलभूत शस्त्रक्रिया करना निहित था। भारत में बढता काला धन यह एक केवल घाव ही नहीं बल्कि यह तो कैंसर की बिमारी है। इसकी जडें विभिन्न तरह से देशभर में फैल गयी हैं। ७० वर्ष के दौरान देश का ऐसा कोई कार्यालय या विभाग नहीं, जहां भ्रष्टाचार न होता हो। या यूं कहिए कि विभिन्न स्त्रोतों से काला धन इतना बढता गया कि अब इस विकृति ने हर एक के दिलों व दिमाग में के रुप में अधिराज्य स्थापित किया है। इस मनोवृत्ति ने देश में अमीरों

www.thearyasamaj.org

और गरीबी संस्कृति की दो दीवारें खडी कर दी हैं ।

वैसे देखा जाय तो धन कमाना कोई बुरी बात नहीं है । देश के लिए जहां धीमान् विद्वानों (ब्राह्मणों) की आवश्यकता है, वहीं श्रीमान् व्यापारियों (वैश्यों) की भी ! क्योंकि वर्णव्यवस्था का उद्देश्य ही राष्ट्र को बलशाही बनाना है । आचार्य चाणक्य कहते हैं - "**धर्मस्य मूलं अर्थः।**" धर्म का मूल अर्थ है । स्पष्ट संकेत है कि हमारा अर्थार्जन धर्म के आधार पर होना चाहिए । अधर्म से अर्जित धन यह अर्थ नहीं, बल्कि अनर्थ कहलाता है ।

आज के बढे हुए काले धन ने अनर्थ का ही तो रुप धारण किया है । वस्तुतः यह काला धन कहां से आया, देश की तिजोरी से, जरुरतमन्दों को लूटकर.... या गरीबों का खून चूसकर....! तब इस काले धन को श्वेत धन का रुप में परिवर्तीत करने की सरकार की पवित्र इच्छा हो, तो इसमें सभी ने पूर्ण सहयोग देना चाहिए ! क्योंकि प्रधानमन्त्री मोदी ने कहा था - "सबका साथ... सबका विकास ।" तब कांग्रेस सहित सभी विरोधी दलों व उनके देशभक्त नेताओं का आद्य कर्तव्य बनता है कि देश के पूर्ण हित में वे दलीय संकीर्णता को दरकिनार करते हुए मोदीजी का साथ दे! किन्तु देश का दुर्भाग्य...! नोटबंदी के फैसले को विरोधियों ने पूरी तरह से गलत, असंवैधानिक, विवेकहीन बताकर और सरकार पर आरोप लगाया है कि संसद को विश्वास में न लेकर जल्दबाजी से लिये गये इस निर्णय में काफी त्रुटियाँ हैं ! इस तरह का शोर शराबा कर विरोधियों ने संसद के शीतकालीन सत्र में व्यवधान खडा कर सत्र को चलने ही नहीं दिया ।

आश्चर्य तो तब हो गया, जब सरकार के नोटबन्दी के खिलाफ़ विरोधी नेताओं के साथ ही अनेकों तथाकथित अर्थशास्त्री व मिडियावाले भी खडे हुए । आये दिन अखबारों में जनता की बढती त्रासदियों की खबरें व फोटों छपवाकर यह निर्णय देशवासिंयो के लिए कितना अयोग्य है, ऐसा बारंबार बताया गया । इतना कुछ होने पर भी देश की जनता सर्वतोमना मोदीजी के साथ रही । सन् १९६५ में तत्कालिन प्रधानमन्त्री लालबहादुर शास्त्रीजी के अनुरोध पर देशवासियों ने सप्ताह में एक बार उपवास कर देश को अकाल की भीषण समस्या से निपटाने में उनका पूरा साथ दिया था, उसी तरह इस समय भी सारी जनता मोदीजी के साथ रही । इससे सिद्ध होता है कि नेक इरादे लेकर देश का नेतृत्त्व प्रामाणिकता के साथ जनता के पूर्ण हित में जुट जाता है, तो उसे जनता का पुरजोर समर्थन मिलता ही है। प्रधानमन्त्री श्री नरेन्द्र मोदीजी ने शुरु किये देश के इस अर्थशुद्धि यज्ञ में हम सब की सश्रद्ध समर्थन की आहुतियाँ पडनी चाहिए । इस यज्ञ के होता श्री मोदीजी का अभिनन्दनं ...!

- नयनकुमार आचार्य

मूर्तिपूजा का इतिहास

- स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती

मूर्ति-पूजा का इतिहास भी बडा मनोरंजक और कौतूहलप्रद है। यूनानियों में कला के विकास के साथ-साथ मूर्ति-निर्माण का व्यवसाय तीव्रता से आगे बढा। चित्रकार और मूर्तिकार के सामने दो आदर्श रहते है - १) प्राकृतिक जगत् में जो पदार्थ अपौरुषेय शक्ति ने उत्पन्न कर रखें है, यथातथ्य उनका चित्रण और अनुरुपण। ऐसा चित्र बनाना या ऐसी मूर्ति बनाना जो देखने पर असली-सी लगे। यूनानियों ने अपने समय के अनेक विद्वानों और युग पुरुषों की मूर्तियाँ तैयार की। यह व्यक्ति ऐतिहासिक थे। यह प्रथा हमारे देश में प्रचलित न थी। जिस युग में मनु, गौतम, कपिल, कणाद या राम और कृष्ण रहे उस युग की कोई भी मूर्ति इन व्यक्तियों को चित्रित करनेवाली आज तक हमें नहीं प्राप्त हुई।

२) कल्पा के आधार पर सूक्ष्म मनोवृत्तियों का चित्रण। यह प्रचुरता से प्राचीन यूनानी मूर्तियों में पाया जाता है। काम, क्रोध, मोह, शौर्य, दारिद्रय आदि मनोभावों को मूर्तिमान् करने का बहुत अच्छा प्रयास इन मूर्तियों में हुआ है। इनमें से कुछ मूर्तियाँ यूनान में देव और देवियों के नाम से भी प्रचलित हुईं। यूनान के इस देवतावाद ने भारतीय देवतावाद को पोषित किया। किन्तु वैदिक देवतावाद के युग में भी इन देवताओं की प्रतिमाएँ तैयार न हुईं। यह ठीक है कि सिन्धु-हडप्पा की खुदाई में छोटी-छोटी कुछ मूर्तियाँ मिलती हैं किन्तु यूनानी प्रतिमाओं की तुलना में यह कला बडे नीचे स्तर की है।

भारतवर्ष में चित्रकला और मूर्तिकला का विकास लगभग ढाई हजार वर्षों से हुआ। मूर्तिकला का प्रारम्भ बौद्ध और जैनों से हुआ। बौद्धों और जैनियों की आस्था सर्वशक्तिमान्, सर्वव्यापक और स्रष्टा ईश्वर में न थी। यह नास्तिक धर्म थे। जब तक महात्मा बुद्ध और महावीर स्वामी जीवित थे तब तक उनके अनुयायी उनसे प्रेरणा पाते थे। उनके समीप बैठकर अपनी भ्रान्तियों का समाधान करते और शान्ति प्राप्त करते। किन्तु महावीर स्वामी भी मर्त्य थे और महात्मा बुद्ध भी। दोनों थे निर्माण के धनी। प्रश्न यह उपस्थित हुआ कि, प्रेरणा का स्त्रोत अब क्या बने? आस्तिकों के लिये तो प्रेरणा का प्रथम और अन्तिम स्त्रोत अन्तःकरण में स्थित ब्रह्म है और ईश्वर का सर्वव्याप्त ज्ञान वेद है। ईश्वर स्वयं हमारे आचरणों का आदर्श(ethical ideal) है। अतः आस्तिक धर्म के माननेवालों का ईश्वर ही

परम आश्रय है। नास्तिकों के लिए आश्रय आवश्यक था, गौतम और महावीर के अनुयायियों को एक बात सूझी- क्यों न गौतम और महावीर की मूर्तियाँ स्थापित की जाएँ, और ये मूर्तियाँ भविष्य में उनकी प्रेरणा का स्त्रोत बनें। यह विचारधारा शीघ्र ही लोकप्रिय हो गयी। दोनों आचार्यों के देहावसान के अनन्तर उन सब स्थानों पर जहाँ इन आचार्यों के पुनीत चरण पडे थे, मूर्तियाँ स्थापित हो गयीं, और जिन भवनों में इन्हें सुसज्जित किया गया उनका नाम भविष्य में मन्दिर या देवालय पडा। देश भर में जैन और बौद्ध धर्म का प्रचार तीव्रगति से हुआ और भारतवर्ष से बाहर भी बौद्धों के तपस्वी प्रचारक पहुँचे। महात्मा बुद्ध की मूर्तियाँ एक प्रकार से विश्वव्याप्त हो गयीं। मूर्तियों के दर्शन के लिए भक्तों की भीड एकत्रित होने लगी। कालान्तर में कई स्थानों पर स्तूप भी बने। राज्याधिकारियों और देश के समृद्ध धनी परिवारों का आश्रय पाकर मन्दिरों और मन्दिर-उपासना की परम्परा लोकप्रिय होती गयी। इस प्रकार नास्तिक कार्यों ने विश्व में मूर्ति पूजा के प्रचलन की नींव डाली। महात्मा बुद्ध और महावीर स्वामी के समय से लेकर स्वामी शंकराचार्य के समय तक देश भर में (दक्षिण भारत में भी) बौद्धों और जैनियों के विशाल मन्दिर तैयार हो गये। महात्मा बुद्ध की छोटी-छोटी मूर्तियाँ भी घर-घर में स्थापित हो गयीं। बडे-बडे चैत्य बनें। पर्वतों की शिलाओं को गढकर मूर्तियाँ बनी। इसी युग में बुद्ध और महावीर के पूर्व-जन्मों की कल्पना भी आरम्भ हुई, और अनेक मिथ्या वार्तायें (myths) भी परिकल्पित की गयीं। इन वार्ताओं के दृश्यों को भी मूर्तिमान् किया गया। चित्रकला और मूर्तिकला के विशेषज्ञों ने इन दन्तकथाओं को अपनी प्रतिभाद्वारा अलंकृत किया। साहित्य के साथ-साथ विविध प्रकार की कलाओं द्वारा जैन और बौद्ध धर्मों का प्रसारण हुआ, और जनजीवन को उसने प्रभावित करना आरम्भ किया।

स्वामी दयानन्द ने लिखा है कि मूर्तिपूजा भारत में जैनियों से चली। यह बात ठीक ही है, यह जैनियों और बौद्धों से चली और धीरे-धीरे विश्व में व्याप्त हो गयी। जैन और बौद्ध परम्पराएँ समकालीन हैं, दोनों के मन्तव्य एक से हैं। दोनों सृष्टि-रचयिता और कर्म-फलदाता ईश्वर के अस्तित्व में विश्वास नहीं करते। बहुत से विद्वान तो यह मानते हैं कि महात्मा बुद्ध और महावीर स्वामी दो पृथक् व्यक्ति नहीं थे - दोनों एक ही थे। वैदिक यज्ञों के भ्रष्टाचार और ब्राह्मणवाद ने जनता में एक प्रतिक्रिया उत्पन्न की। 'पशु यज्ञ से स्वर्ग की प्राप्ति होती' है - इस ढोंग से जैनियों और बौद्धों ने बहुत कुछ छुटकारा दिलाया। जनता का राज्य आरम्भ हुआ, जो ब्राह्मणवाद और क्षत्रियवाद

के विरोध में एक जन-आन्दोलन के रुप में देश छोटे-छोटे साम्राज्यों में बिखर गया, छोटे-छोटे गणतन्त्रों में । इन गणतन्त्रों का नियन्त्रण बौद्धों के मठों, बौद्ध संघों और विहारों के हाथ में आ गया। अधिकांश शासक और उनकी जनता बौद्ध हो गयी अथवा जैन। दक्षिण में कन्याकुमारी तक जैन और बौद्धों के भव्य चैत्य, विहार और बडे-बडे मन्दिर बनें। मन्दिरों में धनिकों का वैभव इकट्ठा होने लगा ।

जैसे ईसाइयों के चर्चों की नकल में आर्यसमाज ने अपने मन्दिर बनाये, और रविवारी अधिवेशन की नींव डाली, और सामूहिक प्रार्थना-उपासना की, उसी प्रकार जैन और बौद्धों के विशाल मूर्तियोंवाले मन्दिरों को देखकर वैदिक काल की परम्परावाले आर्य भारतीयों को भी प्रलोभन लगा- यज्ञों के विरोध में जनता कटिबद्ध थी, तो आर्यों ने भी यज्ञ बन्द कर दिये और इन्होंने देवालयों की स्थापना जैनियों और बौद्धों की नकल में आरम्भ की, और अर्चना और पूजा की विधियों में भी जैन मन्दिरों और बौद्ध मन्दिरों की नकल की । आर्यों के सामने प्रश्न यह उपस्थित हुआ कि देवालयों में किसकी मूर्ति स्थापित की जाये । बौद्धों से पूर्व आर्यों के मस्तिष्क में अवतारवाद की गन्ध भी न थी । इनके पास पुराण भी न थे (तथाकथित कहानियों के!)- पर इन्हें अब जैनों और बौद्धों की प्रतियोगिता में कुछ चाहिये तो था ? इनके पास रामायण और महाभारत के समान दो महाकाव्य थे (१० हजार श्लोकों का "जय" नाम का काव्य, जो बाद में भीमकाय होकर एक लाख श्लोकों का भारत या महाभारत बन गया)। वाल्मिकी के काव्य में कल्पना अधिक थी, ऐतिहासिकता कम, फिर भी यह आर्यकाव्य था, जिसका नायक राम एक मानव था(न कि देवता)- मानवीय चरित्रों का आदर्श। वाल्मीकि के आदि काव्य में न तो शकुन-अपशकुन थे, न शिव के स्तोत्र- ये प्रक्षेप बाद को मिलाये गए । जैन-युग में (ईसा की पहली शती से लेकर तीसरी शती में) राम और कृष्ण को महावीर स्वामी और महात्मा बुद्ध के समान अमानवीय व्यक्ति घोषित कर दिया गया। भारतीय संस्कृति के ये दो आदर्श आज तक हिन्दुओं के जनजीवन की प्रेरणा बने हुए हैं । ये दोनों मनुष्य भी हैं, पर मनुष्य के चोले में स्वयं विष्णु के अवतार हैं । महात्मा बुद्ध के अनेक वर्ष पूर्व जन्मों की कल्पना और तीर्थकारों की आदिवंशावली ने ब्रह्मा-विष्णु-महेश, उनके परिवार, उनकी सन्तान, उनकी पत्नी आदि सबकी कल्पनाएँ बना डालीं। बौद्ध पुराणगाथा के समान भारत में इस प्रकार पौराणिक धारा का प्रारम्भ हुआ, जिसकी विशेषताएँ ये थीं- १.अवतारवाद, २.अवतारी व्यक्तियों के मानवीय अथवा विशिष्ट मानवीय स्वरुपों

की कल्पना, ३.उनके पारिवारिक जीवन और चरित्र की विस्तृत दन्तकथाएँ, ४. कलाकारों की प्रतिभा की द्योतक मूर्तियों का निर्माण और प्रचलन, ५. मन्दिरों का निर्माण, ६.मन्दिरों में अर्चना और पूजा की विधियों का विकास, ७.पूजा के स्तोत्रों की साहित्यिक कवियों द्वारा रचना और ८.पूजा का माहात्म्य।

सिकन्दर के समय से भारत में यूनानवासियों का आवागमन आरम्भ हो चुका था। यूनान और मध्य-पूर्वीय देशों के व्यक्तियों के पास ज्ञान-विज्ञान का भण्डार भी था, जिसे शतियों पूर्व उन्होंने भारत से प्राप्त किया था, पर बाद को जिसे उन्होंने अपने ढंग से विकसित भी किया। यूनानियों की मूर्ति कला अद्वितीय थी, जिसके सुन्दर उदाहरण अब भी ऐथन्स (एक्रोपोलिस) में विद्यमान हैं। यूनानी मूर्तिकला का आर्यावर्त्त में भारतीयकरण भी हुआ। यूनान में देवालय भी थे, जिनमें वेदों के देवताओं को मूर्तिमान् कर दिया गया था - तीन लोकों के देवता पृथिवी के, अन्तरिक्ष के और द्यौलोक के (अग्नि, वायु और आदित्य और इनके साथ के अन्य) यूनानी कलाकारों की प्रतिभा द्वारा मूर्तिमान किये जा चुके थे। इनमें से अनेक देवताओं की मूर्तियाँ भारतीयकरण के परिवेश में भारत के मन्दिरों में स्थापित होने लगीं। मध्य-पूर्वीय देशों से यौन-उपासना भारत में भी आयी, जिसने मन्दिरों में शिवलिंग की स्थापना की, और लिंगोपासना की पौराणिक कथा को जन्म दिया। यूनान में मानवीय वृत्तियों को भी मूर्तिमान् किया गया है - काम, प्रेम, ईर्ष्या, पौरुष, लज्जा, करुणा आदि में। भारतीय कलाकारों ने इस प्रकार की मूर्तियों का भी शिल्प आरम्भ किया, जिसके परिणामस्वरुप कामदेव और उसका धनुष, सरस्वती और उसकी वीणा एवं सरस्वती का वाहन, लक्ष्मी और उसका उलूक, शिव और उसके गण, यम और मृत्यु, मयराज और चित्रगुप्त, सूर्य और उसके रथ, और रथ में जोते हुए घोडों की मूर्तियाँ, कालचक्र, स्वर्ग और नरक इन सभी को मूर्तियों के रुप में आलोकित किया गया। चारों वेदों की मूर्तियाँ बनीं और संगीतज्ञों ने राग-रागनियों को भी मूर्ति और चित्र द्वारा व्यक्त किया। मूर्ख जनता धीरे-धीरे मूर्तिपूजक हो गई, उसने गंगा की भी मूर्ति बना डाली और यमुना की भी, और धीरे-धीरे मूर्तियों की परमात्मा के स्थान में पूजा आरम्भ हो गई, मध्य-पूर्वी देशों में ईसा और हजरत मोहम्मद के उपदेशों के फलस्वरुप मूर्तिपूजा बहुत कुछ समाप्त हो गई। (रोमन-कैथोलिक कुछ देशों में अब भी मूर्तिपूजक हैं, दन्तकथाओं को प्रोत्साहन देते हैं, पर पौराणिकों से कम ही; मुसलमानों ने मूर्तिपूजा से बचने का अद्वितीय प्रयत्न किया, पर कबर-परस्ती में और अन्धविश्वासों में वे भी फैल गए।) भारतवर्ष

में पेडों और चौरस्तों, नागों और रीछ, भालू और पक्षियों की पूजा भी धीरे-धीरे प्रचलित हो गई ।

मूर्तिपूजा का समस्त इतिहास बडा मनोरंजक है। मूर्तिपूजा के प्रचलन और पोषण के भिन्न कारण बनें- १.नास्तिक धर्मों का (जैनियों और बौद्धों का) प्रभाव, २. मध्य-पूर्वीय देशों और विशेषतया यूनानियों का प्रभाव, ३.कलाकारों की कल्पना का प्रभाव (कविता, नाटक, चित्रकला और मूर्तिकला, संगीत कला, नृत्य कला, इन सबने मूर्तिपूजा को प्रोत्साहन दिया), ४. पौराणिक दन्तकथाओं का प्रभाव।

मूर्तिपूजा निम्न हानियों का विशेषतया कारण बनी - १.द्वेष और वैमनस्य, शैव-वैष्णवौं की कलह अब तक प्रसिद्ध है, २.सम्प्रदायवाद-मूर्तियों की आकृतियों को लेकर देश के आर्य विभिन्न सम्प्रदायों में बट गए, ३.पण्डा और पुरोहितवाद और साथ ही साथ मठाधीशों और शंकराचार्यों की स्वेच्छाचारिताओं का इतिहास, ४. स्वार्थपरायणता का नग्न नृत्य और मूर्ख जनता का शोषण, ५.अन्धविश्वासों और ढोंगो का आधिपत्य, ६. आस्तिकता का लोप, ७. पूजा के अधिकारी और अनधिकारी होने का ढोंग, देवालय प्रवेश-निषेध, अस्पृश्यता, जात-पात आदि कुरीतियों का प्रसारण ।

(यह ऐतिहासिक लेख उदगीर के स्वाध्यायशील आर्य कार्यकर्ता श्री प्रकाशवीर आर्य ने भेजा है ।)

- सुभाषित दर्शन- लोग पाप में लगे हैं... आश्चर्य?

व्याघ्रीव तिष्ठति जरा परितर्जयन्ती,
रोगाश्च शत्रव इव प्रहरन्ति देहम् ।
आयुः परिस्त्रवति भिन्नघटादिवाम्भो,
लोकस्तथाप्यहितमाचरतीति चित्रम्।।

अर्थ -

शेरनी के समान भयभीत करनेवाला बुढापा सामने खडा है, अनेक प्रकार के रोग शत्रुओं के समान शरीर पर आक्रमण कर रहे हैं और फूटे हुए घडे में से जैसे निरन्तर पानी रिसता रहा है, वैसे ही आयु क्षीण होती जा रही है, अहो ! कितने आश्चर्य की बात है कि लोग फिर भी पाप कर्मों में लगे हुए है !

एक संस्मरण

डॉ.धर्मवीरजी का बलिदान

– डॉ.महावीर मीमांसक

शायद सन १९५५ की बात है। धर्मवीर नाम का एक बच्चा गुरुकुल झज्जर (हरयाणा) में अध्ययन के लिये प्रविष्ट हुवा । मैं उन दिनों गुरुकुल झज्जर में संरक्षक और अध्यापक था। ब्र.धर्मवीर मेरे संरक्षण में आया और मैंने तुरन्त पहचान लिया कि ब्र.धर्मवीर एक कुशाग्र बुद्धि बालक है । बोलने से तुरन्त पता चल गया कि ब्र.धर्मवीर बोलने में भी वाग्मी है ।

गुरुकुल झज्जर के वार्षिकोत्सवों पर ब्रह्मचारियों के भी भाषण रखे जाते थे । पहले ही वार्षिक उत्सव पर भाषण के लिये मैंने ब्र.धर्मवीर को चुना, उसके लिये भाषण लिखा और उसे वह भाषण याद करवाया । भाषण देने के समय ब्र.धर्मवीर का नाम पुकारा गया । ब्र. धर्मवीर इतना छोटा था कि स्वयं स्टेज पर चढ नहीं सकता था । मैंने उसे अपनी गोदी में उठाकर स्टेजपर चढाया । ब्र.धर्मवीर ने पटापट अपनी ओजस्वी वाणी से भाषण दिया और भाषण समाप्त होते ही श्रोताओं ने तालियों से वातावरण को गुंजा दिया । अनेक लोगों ने ब्र.धर्मवीर पर पारितोषिकों की वर्षा कर दी। यह था मेरा ब्र.डॉ.धर्मवीर के साथ सम्बन्ध ! ब्र.धर्मवीर मुझे हमेशा अपना पितृवत् गुरु मानते थे। कहानी तो आयुभर तक लम्बी है । समय बीता । ब्र.धर्मवीर गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय में प्रविष्ट हुवे । मैं गुरुकुल कांगडी में वेदविभाग में अध्यापक नियुक्त हुवा । ब्र.धर्मवीर प्रतिदिन मुझे सायंकाल हर की पोडी पर घुमाने ले जाते और गंगा के ठण्डे पानी में आम भिगो-भिगोकर मुझे खिलाते ।

अजमेर में डॉ.धर्मवीरजी की नियुक्ति डी.ए.वी.कालेज में प्राध्यापक पद पर हुई। साथ-साथ स्वामी ओमानन्दजी ने उन्हें परोपकारिणी सभा में भी सेवा के लिये रख लिया । प्रधान के रुप में परोपकारिणी सभा को डॉ.धर्मवीरने चरम उत्कर्ष पर पंहुचा दिया । क्या भवन निर्माण ? क्या प्रकाशन कार्य ? क्या परोपकारिणी पत्रिका ? सब प्रकार से सभा की नि:शुल्क सेवा करते हुए सभा का नाम सर्वोच्च स्थान पर ले आये । डॉ.धर्मवीर गृहस्थ होते हुए भी एक सन्यासी थे । अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के विद्वान, लेखक और वक्ता थे । आर्य समाज पिलखवा(उ.प्र.) के कार्यक्रम में बीमार अवस्था में भी भाषण देने गये थे । बीमार होते हुये भी दवाई खाते-खाते भाषण देते रहे । अन्ततोगत्वा अजमेर में ६ अक्तूबर २०१६ में प्रात: ५ बजे आर्य समाज की बलिवेदी पर शहीद हो गये । आर्य समाज ने एक अनमोल रत्न खो दिया, उसकी क्षतिपूर्ति असम्भव है ।

– ए-३/११ पश्चिम विहार,
नई दिल्ली-११००६३

www.thearyasamaj.org

गणतन्त्र दिवस पर विचारोत्तेजक रचना-

घायल भारत माता की तस्वीर...

- कविवर हरिओम पवार

मैं भी गीत सुना सकता हूँ शबनम के अभिनन्दन के
मैं भी ताज पहन सकता हूँ नंदनवन के चन्दन के
लेकिन जब तक पगडण्डी से सद तक कोलाहल है
तब तक केवल गीत पढूंगा जन-गण मन के क्रंदन के
जब पंछी के पंखों पर हों पहरे बम के, गोली के
जब पिंजरे के कैद पडे हों सुर कोयल की बोली के
जब धरती के दामन पर हों दाग लहू की होली के
कैसे कोई गीत सुना दे बिंदिया, कुमकुम, रोली के
मैं झोपडियें का चारण हू, आंसू गाने आया हूं ।
घाल भारत माता की तस्वीर दिखाने लाया हूँ ।।

कहाँ बनेंगे मंदिर-मस्जिद कहां बनेगी राजधानी
मण्डल और कमण्डल ने पी डाला आंखों का पानी
प्यार सिखानेवाले बस्ते मजहब के स्कूल गये
इस दुर्घटना में हम अपना देश बनाना भूल गये
कहीं बमों की र्म हवा है और कहीं त्रिशूल चलें
सोन-चिरैया सूली परा है पंछी गाना भूल चले
आंख खुली तो माँ का दामन नाखूनों से त्रस्त मिला
जिसको जिम्मेदारी सौंपी घर भारने में व्यस्त मिला
क्या ये ही सपना देखा था भगत सिंह की फांसी ने
जागो राजघाट के गांधी तुम्हें जगाने आया हूँ ।
घायल भारत माता की तस्वीर दिखाने लाया हूँ ।।

एक नया मजहब जन्मा है पूजा घर बदनाम हुए
दंगे कत्लेआम हुए जितने मजहब के नाम हुए
मोक्ष कामना झांक रही है सिंहासन के दर्पण में
संन्यासी के चिमटे हैं अब संसद के अलिंगन में
तूफानी बादल छाये हैं नारों के बहकावों के
हमने अपने इष्ट बना डाले हैं चिन्ह चुनावों के
ऐसी आपा धापी जागी सिंहासन को पाने की
मजहब पगडण्डी कर डाली राजमहलों में जाने की
जो पूजा के फूल बेच दे खुले आम बाजारो में
मैं ऐसे ठेकेदारों के नाम बताने आया हूँ।
घायल भारत माता की तस्वीर दिखाने लाया हूँ ।।

कोई कलमकार के सर पर तलवारें लटकाता है
कोई बन्दे मातरम के गाने पर नाक चढाता है
कोई-कोई ताजमहल का सौदा करने लगता है
कोई गंगा-यमुना अपने घर में भरने लगता है ।
कोई तिरंगे झण्डे को फाडे-फूंके आजारी है
कोई गाँधी जी को गाली देने का अपराधी है
कोई चाकू घोंप रहाहै संविधान के सीने में
कोई चुगली भेज रहा है मक्का और मदीने में
कोई ढांचे का गिरना यू.एन.ओ. में ले जाता है
कोई भारत माँ को डायन की गाली दे जाता है
लेकिन सौ गाली होते ही शिशुपाल सभी कट जाते हैं।
तुम भी गाली गिनती रहना जोड सिखाने लाया हूँ ।
घायल भारत माता की तस्वीर दिखाने लाया हूँ ।।

जब कोयल की डोली गिद्धों के घर में आ जाती है
तो बगुला भगतों के टोली हंसों को खा जाती है

इनको कोई सजा नहीं है दिल्ली के कानूनों में
न जाने कितनी ताकत है हर्षद के नाखूनों में
जब फूलों को तितली भी हत्यारी लगने लगती है
तब माँ की अर्थी बेटों को भारी लगने लगती है
जब-जब भी जयचंदों का अभिनन्दन होने लगता है
तब-तब सांपों के बंधन में चछनर रोने लगता है ।
जब जुगनू के घर सूरज के घोडे सोने लगते हैं
तो केवल चुल्लू भर पानी सागर होने लगते हैं
सिंहों को म्याँऊ कह दे क्या ये ताकत बिल्ली में हैं
बिल्ली में क्या ताकत होती कायरता दिल्ली में है
कहते हैं यदि सच बोलो तो प्राण गंवाने पडते हैं।
मैं भी सच्चाई गा-गाकर शीश कटाने आया हूँ ।
घायल भारत माता की तस्वीर दिखाने लाया हूँ ।।

भय बिन होय न प्रीत गुसाई-रामायण सिखलाती है
राम-धनुष के बल पर ही सीता लंका से आती है
जब सिंहों का राजसभा में गीदड गाने लगते हैं
तो हाथी के मुँह के गन्ने चूहे खाने लगते हैं
केवल रावलपिंडी पर मत थोपो अपने पापों को
दूध पिलाना बंद करो अब आस्तीन के सांपों को
अपने सिक्के खोटे हों तो गैरों को बन आती है
और कला की नगरी मुंबई लहू में सन जाती है
राजमहल के सारे दर्पण मैले-मैले लगते हैं
इन सब षड्यन्त्रों से परदा उठना बहुत जरुरी है
पहले घर के गद्दारों का मिटना बहुत जरुरी है
पकड गर्दने उनको खींचों बाहर खुले उजाले में
चाहे कातिल सात समंदर पार छुपा हो ताले में
ऊधम सिंह अब भी जीवित है ये समझाने आया हूँ ।
घायल भारत माता की तस्वीर दिखाने लाया हूँ ।।

***

www.thearyasamaj.org

ग्रंथसमीक्षा डॉ.चंद्रकांत गर्जे लिखित ग्रंथ की समीक्षा

महात्मा बसवेश्वर और महर्षि दयानंद

- डॉ.सूर्यनारायण रणसुभे

म.बसवेश्वर १२वीं सदी के कर्नाटक के नवजागरण के उन्नायकों में से एक हैं, तो महर्षि दयानंद सरस्वती १९वीं सदी के हिंदी प्रदेश के नवजागरण के उन्नायकों में से एक हैं । इन दोनों की जो जन्मभूमि थी, वह इनकी कर्मभूमि नहीं थी। म.बसवेश्वर की विचारधारा का प्रभाव कर्नाटक और महाराष्ट्र के कुछ हिस्सों पर रहा । या यूँ कहें कि उनसे प्रेरणा लेकर उनके नवजागरण का यह प्रभाव पूरे दक्षिण पर कम-अधिक मात्रा में रहा। तो ऋषि दयानंद का प्रभाव आज के हरियाणा, पंजाब, उत्तर प्रदेश, मध्यप्रदेश तथा अन्य हिंदी प्रदेशों पर कुछ अंशों में रहा। आर्य समाज दक्षिण में फैल नहीं सका।

दो भिन्न काल में जन्मे इन दो महापुरुषों के विचारों और कार्यों की तुलना करने का साहसपूर्ण निर्णय डॉ.गर्जे जी ने लिया इसीलिए वे बधाई के पात्र हैं। इन दोनों में तुलना कैसे क्या संभव है ? इस प्रकार का प्रश्न बसव साहित्य के गंभीर अध्येता श्री.टी.जी. प्रभाशंकर के मन में उठना स्वाभाविक है । क्योंकि बसवेश्वर वेद-विरोधी, तो दयानंद वेद-समर्थक ! इस तुलनात्मक अध्ययन को लेकर डॉ.टी.जी.प्रभाशंकर शंकालु थे । परंतु पूरी पुस्तक पढने के बाद उन्होंने लिखा- "सचमुच यह अभिनंदनीय कार्य है। लेखक ने पूरी लगन और परिश्रम से दोनों महात्माओं पर, विशेषकर म.बसवेश्वर पर समग्रता से और सूक्ष्म दृष्टि से अध्ययन किया है।" हालांकि गर्जे जी ने विनम्रता से यह स्पष्ट किया है कि वे कन्नड नहीं जानते हैं। बसवेश्वर के जितने भी वचन हिंदी/मराठी में उपलब्ध हैं, उनका अध्ययन इन्होंने किया। दोनों महात्माओं के कुछ विचारों में उन्हें समानता मिली और उसी का विस्तार उन्होंने किया है।इसीलिए वे अभिनंदन के पात्र हैं।

तुलनात्मक अध्ययन का एक आयाम यह भी होता है कि जिन दो बातों की तुलना अध्येता करते रहता है, वह उनके विचारों के साम्य और भेद को कारणों सहित स्पष्ट करें । पूरी पुस्तक में पूरे परिश्रम से समानता के बिंदू तलाशे गए हैं; परंतु विभेद के बिंदुओं को और उनके कारणों को पूरी तरह छोड दिया गया है ।

यहाँ यह स्पष्ट कर देना जरुरी है कि जो हिंदी भाषी या गैर कन्नड भाषी हैं, उन्हें इस पुस्तक के कारण म.बसवेश्वर के व्यक्तित्त्व का, उनके विचारों और कार्यों

का अच्छा परिचय हो जाएगा। ठीक इसी प्रकार कन्नड भाषियों को-वे अगर हिंदी पढना जानते हो, तो महर्षि दयानंद के व्यक्तित्त्व और कृतित्त्व का परिचय प्राप्त हो जाएगा। इस प्रकार गर्जे जी ने एक सांस्कृतिक दूत की भूमिका पूरी ईमानदारी से निभाई है। म.बसवेश्वर और ऋषि दयानन्द के कार्यों का परिचय दिया है। इसीलिए वे बधाई के पात्र हैं। यह पुस्तक इन दो महात्माओं के विचारों का गंभीर व गहरा अध्ययन करनेवाले अध्येताओं के लिए नहीं,अपितु इन दोनों के प्रति जिज्ञासु व्यक्तियों के लिए भी है।

पुस्तक का प्रकाशन आर्य प्रकाशन, पिंपरी, पुणें (महाराष्ट्र) की ओर से हुआ है। १९२ पृष्ठों की इस पुस्तक का मूल्य मात्र १००/- रखे गया है। स्तरीय कागज और निर्दोष छपाई के लिए प्रकाशक बधाई के पात्र है। इस पुस्तक के लेखन और प्रकाशन के लिए लेखक गर्जे जी का पुनःश्च अभिनंदन !

- अजिंक्य सिटी, अंबाजोगाई रोड,
लातूर मो.९४२३७३५३९३

दयानन्द एज्युकेशन सोसायटी, हिंगोली

नयी कार्यकारिणी का गठन

हिंगोली की प्रसिद्ध आर्य शिक्षा संस्था 'दयानन्द एज्युकेशन सोसायटी' की वार्षिक सर्वसाधारण सभा दि.३ दिसम्बर २०१६ को सम्पन्न हुई, जिसमें संस्थान के लगभग सभी सदस्यों ने शिरकत की। इस अधिवेशन में सदस्यों ने सर्वसम्मति से श्री सुरेशचन्द्रजी प्रेमचन्द्रजी राठौर का नये अध्यक्ष के रुप में चयन किया। उपाध्यक्ष पद का भार श्री ओमप्रकाशजी भिख्कुलालजी भारुका पर सौंप दिया गया है। जब कि सचिव के रुप में पूर्ववत् श्री अनिलकुमार ओमप्रकाश भारुका एवं कोषाध्यक्ष पद पर श्री उग्रसेन भद्रसेनजी राठौर बने रहेंगें।

इस शिक्षा संस्थान के वर्तमान अध्यक्ष वयोवृद्ध आर्य कार्यकर्त्ता श्री गुलाबचन्दजी लदनिया का पिछले माह देहावसान होने से अध्यक्षस्थान रिक्त हो चुका था। अतः कार्यकारिणी में परिवर्तन करने के उद्देश्य से यह सभा बुलाई गयी थी, जिसमें उपरोक्त पदाधिकारियों का चयन किया गया है। पाठकों को ज्ञात हो कि 'दयानन्द एज्युकेशन सोसायटी' यह संस्था शिक्षाक्षेत्र में प्रगतिशील मानी जाती है। इसकी स्थापना हिंगोली की कर्मठ आर्यजनों ने आज से लगभग ६५ वर्षों पूर्व शिक्षाप्रसार के पवित्र उद्देश्य से की थी। सम्प्रति संस्था के १९ सदस्य हैं। नई कार्यकारिणी का सभा व आर्य समाजों की ओर से अभिनन्दन व शुभकामनाएं।

www.thearyasamaj.org

।। कृण्वन्तो विश्वमार्यम् ।।

वेदों की ओर लौटो !

वेद प्रतिपादित मानवीय
जीवन मूल्यों को
जन-जन तक पहुँचाने हेतु
कार्यतत्पर सशक्त एवं समर्थ प्रान्तीय आर्य संगठन

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा

(पंजीयन-एच. 333/र.नं.६/टी.इ. (७)१६७/१०४९,
स्थापना ५ मार्च १९७७)

* मानवकल्याणकारी उपक्रम *

- 'वैदिक गर्जना' मासिक मुखपत्र
- आर्य समाज दिनदर्शिका
- पू. हरिश्चन्द्र गुरूजी गौरव- 'मानवता संस्कार एवं आर्यवीरदल शिविर'
- आर्य कन्या वैदिक संस्कार शिविर
- पातञ्जल ध्यानयोग शिविर
- प्रान्तीय आर्य वीर दल प्रशिक्षण शिविर
- पुरोहित प्रशिक्षण शिविर
- मानव जीवनकल्याण वेद प्रचार (श्रावणी) उपाकर्म अभियान
- स्व. विठ्ठलराव बिराजदार स्मृति विद्यालयीन राज्य. वक्तृत्व स्पर्धा
- सौ. तारादेवी जयनारायणजी मुंदड़ा विद्यालयीन राज्य.निबंध स्पर्धा
- सौ. कलावतीबाई व श्री मन्मथअप्पा चिल्ले (आनन्दमुनि) महाविद्यालयीन राज्य. वक्तृत्व स्पर्धा
- विद्यार्थी सहायता योजना
- सौ.डॉ. विमलादेवी व श्री डॉ.सु.ब.काले (ब्रह्ममुनि) महाविद्यालयीन राज्य. निबन्ध स्पर्धा
- स्व.पं. रामस्वरूप लोखण्डे स्मृति संस्कृत राज्य प्रतियोगिताएं
- मानवजीवन निर्माण अभियान - विद्यालय व महाविद्यालयों के लिए (वैदिक व्याख्यानमाला)
- शान्तिदेवी मायर स्मृति मानवनिर्माण एवं सेवा योजना
- स्व. भसीन स्मृति एवं मायर गौरव स्वास्थ्य रक्षा एवं चिकित्सा शिविर
- शान्तिदेवी मायर विधवा सहायता योजना
- वैदिक साहित्य भेट योजना
- पंथ-जातिप्रथा निर्मूलन अभियान
- वैदिक साहित्य प्रकाशन योजना
- आपत्कालीन सहायता योजना
- पर्जन्यवृष्टि यज्ञ अभियान
- गौ-कृषि सेवा योजना
- स्वा.सै.श्री गुलाबचंदजी लदनिया गौरव राज्य योगासन प्रतियोगिता
- सौ.धापादेवी गु. लदनिया गौरव राज्य प्राणायाम प्रतियोगिता

www.thearyasamaj.org

।।ओ३म्।।

माझा मराठाची बोलु कवतिके । परि अमृतातेही पैजेसीं जींके ।
ऐसी अक्षरेंचि रसिकें । मेळवीन ।। (संत ज्ञानेश्वर)

मराठी विभाग

वेद संदेश

सर्वांपासून निर्भयता यावी

यतोयत: समीहसे ततो नो अभयं कुरु ।
शं न: कुरु प्रजाभ्योऽभयं न: पशुभ्य:।। (यजु.३६/२२)

हे परमेश्वरा! तुम्ही आपल्या कृपाप्रसादाने ज्या-ज्या स्थानापासून चांगल्या प्रकारचे कार्य (प्रयत्न) करीत आहात, त्या-त्या सर्वांपासून आम्हांस निर्भयी बनवा. तसेच आमच्या प्रजाजनांकडून आणि आमच्या गायी वगैरे पशु-प्राण्यांकडून आम्हा सर्वांना सुख प्राप्त व्हावे व त्यांच्यापासूनही आम्हांस निर्भयता मिळावी.

दयानंद वाणी

देशाचे तुकडे का झाले ?

देशातच अशी अंदाधुंदी सुरु झाल्यानंतर परादेशातील राज्यांची व्य वस्था कोण पाहणार ? जेव्हा ब्राह्मणच विद्याविहीन बनले, तेव्हा क्षत्रिय, वैश्य व शूद्र अविद्वान बनले असल्यास काय आश्चर्य ? वेदादि शास्त्रांचे अर्थासह पठनपाठन करण्याची परंपराही खंडित झाली. केवळ पोट भरण्यासाठी ब्राह्मण लोक वेदांची घोकंपट्टी करीत राहिले. तो पोपटपंचीही त्यांनी क्षत्रियादिकांना शिकवली नाही. कारण जेंव्हा अविद्वान लोक गुरु बनले तेंव्हा त्यांच्यात कपट, लबाडी, फसवाफसवी आणि अधर्म यांचाच बुजबुजाट झाला. ब्राह्मणांनी असा विचार केला की, आपल्या पोटापाण्याची काहीतरी व्यवस्था केली पाहिजे. म्हणून त्यांनी आपसात संगनमत करुन असे ठरविले की, लोकांना अज्ञानात ठेवले पाहिजे. त्याप्रमाणे त्यांनी आपसात संगनमत करुन असे ठरविले की,'आम्हीच तुमचे पूजनीय देव आहोत. आमची सेवा केल्याखेरीज तुम्हाला स्वर्ग किंवा मुक्ती मिळणार नाही. तुम्ही आमची सेवा न कराल तर घोर नरकात जाल.'

(सत्यार्थप्रकाश-११ वा समुल्लास)

वेदांची चित्रे वेदाभ्यासकांना तारतील काय ?

– स्वामी सम्यक् क्रांतिवेश(संभाजी पवार)

दै.सामनाच्या (दि.१५ मे २०१६) उत्सव पुरवणी अंकात "**वेदांची चित्रे अन् सर्वेक्षण**" हा गणेश उदावंत यांचा लेख प्रकाशित झाला आहे. यात ते लेखाच्या सुरुवातीस म्हणतात की, "शरीर नाशिवंत आहे, पण आत्मा अमर आहे. म्हणून जीवनात प्रगती साधतांना धर्माचरणात कसूर होता कामा नये. अशी वेदांची शिकवण आहे. वेद हे सर्वांसाठी आहेत. वेदमार्ग म्हणजे आदर्श जीवनाचा मूर्तिमंत ठेवा. अशी व्याख्या धर्म शास्त्राचे अभ्यासक एस.के. कुलकर्णी यांनी केली आहे. तसेच हिंदू धर्माची मूलभूत तत्वे वेदांतातील मननात्मक व तर्कात्मक तत्वज्ञानावर आधारलेली आहेत." हे ठीक आहे. पण पुढे ते म्हणतात –

"विश्व हे एक दिक् व काल या दोन्ही दृष्टींनी अनंत आहे. असा वेदांचा सिद्धांत कधीही दिसणार नाही. असा स्वामी विवेकानंद यांनी वेदांचा गौरव केला आहे." याचा अर्थ असा होतो की, विश्व हे दिक् व काल या दोन्ही दृष्टींना सांत आहे. म्हणजे अंत आहे. शेवट आहे. ज्याला अंत किंवा शेवट असतो त्याला सुरुवात किंवा प्रारंभ ही असतोच. म्हणजेच विश्व हे दिक् व काल या दोन्ही दृष्टींनी आरंभ व शेवट असणारे आहे. असा वेदांचा सिद्धांत आहे. हा स्वामी विवेकानंदांचा वेदाबद्दलचा अभिप्राय आहे. ही बाब कांहीशी विचारणीय ठरते. कारण लेखाच्या सुरुवातीसच म्हटले आहे की, शरीर नाशिवंत आहे व आत्मा अमर आहे. आता ही तर स्पष्टच बाब आहे की, शरीर व आत्मा ही दोन्हीही विश्वातच आहेत. विश्वाच्या बाहेर कोणीच नाही. शरीर नाशिवंत होतो की, विश्वाला सांत समजावे की अनंत ? वास्तव कोणते ? येथे याला उलगडा झालेला नाही. म्हणून स्वामी विवेकांनदांनी वेदांचा गौरव कसा व कोणत्या प्रकारे केला आहे, हे स्पष्ट होत नाही. यातील अंतर्विरोध तर दूर झाला पाहिजे! असो. पुढे ते म्हणतात, "सारांश वेद हे आत्मसाक्षात्कारासाठी उपयोगी ठरणार आहेत." हेही ठीक आहे. आणखी पुढे ते म्हणतात, "चार वेद अठरा पुराणे.... इ.इ. अशा प्रकांड साहित्याच्या आधारे हिंदू धर्माची जडण-घडण झाली आहे..... वेदांचे महत्त्व अगाध आहे. जीवनात सुख समृद्धी प्राप्त होण्यासाठी यज्ञ, दान, तप, कर्म आणि स्वाध्याय ही पंचसुत्री वेदांनी

मानवाला अंगिकारण्यास सांगितली. म्हणजेच कर्म उपासना आणि ज्ञान या तीन गोष्टींवर वेद अधारलेले आहे. हे ही ठीक आहे."

पुढे मुख्य विषयाशी सुरुवात करताना ते म्हणतात की, "वेदांच्या संदर्भात हा आलेख नोंदवण्याचे निमित्त संभाजी नगरातील प्रा.डॉ.अजीत देव यांनी **"वेदा:सर्वहितार्थाय"** असे म्हणत वेदांची छायाचित्रे संकलित केली आहेत. या कार्यासाठी त्यांना सात वर्षे कष्ट करावे लागले. या संग्रहात चारही वेदांची विविध मुद्रातील ४२ चित्रे प्रसिद्ध झाली आहेत. सर्वच चित्रे दुर्मिळ असून सावरगाव येथील चतुर्वेदेश्वर धाममध्ये देवघरात पूजली जाणारी वेदमूर्ती वाचकांसमोर उपस्थित केली आहेत. ही सर्व माहिती वेदाचा अभ्यास करणाऱ्या उपासकांसाठी महत्वाचीच आहे. तशीच ती इतरांनाही मार्गदर्शक आहे.

तसेच एक छोट्या चौकोणात मध्यभागी गोलाकारात गणपतीचे चित्र व चारी कोपऱ्यात छोट्या-छोट्या चौकोनात चार वेदांची चित्रे ज्यांचे स्पष्टीकरण असे की, ऋग्वेदाच्या चित्रात ऋग्वेदाचा पुरुष गर्दभ (रासभानन) म्हणजे गाढव असून श्वेतवणे व उजव्या हातात रुद्राक्ष माळा व व्याख्यान व मुद्रेत यजुर्वेदाचा पुरुष बोकड (अजास) असून पीतवर्ण व डाव्या हाती कुलीश अस्त्र सामवेदाचा पुरुष घोडा (हयानन) असून त्याचा वर्ण नीलकमल पुष्पाप्रमाणे आहे. डाव्या हातामध्ये शंख आहे. अथर्ववेदाचा पुरुष वानर मुख (मर्कटानन) माकड असून धवल वर्ण व उजव्या हातात मंगलकलश आहे. असे चित्रित केले आहे."

या ठिकाणी सर्वात मोठा प्रश्न असा निर्माण होतो की, ही चित्रे कशाच्या आधारावर बनविण्यात आली आहेत? हे बघा विद्-ज्ञाने, विद्-विचारणे, विद्-सत्तायाम्, विदृ-लाभे असा धात्वार्थवाचक 'वेद' शब्द बनला आहे. म्हणजेच वेद म्हणजे ज्ञान, वेद म्हणजे विचार, मनन, चिंतन! वेद म्हणजे सत्ता-वास्तविकता-अस्तित्व, वेद म्हणजे लाभ-प्राप्ती. वेद म्हणजे ज्ञान ग्रंथ असल्यामुळेच आर्य समाजाचे संस्थापक महर्षी दयानंद सरस्वती यांनी आर्य समाजाच्या १० नियमांपैकी तिसऱ्या नियमात म्हटले आहे की, "वेद हे सर्व सत्य विद्या-ज्ञानाचे ग्रंथ आहेत. वेदाचे अध्ययन-अध्यापन व श्रवण-श्रावण करणे म्हणजे वेद शिकणे-शिकविणे व ऐकणे-ऐकविणे हा प्रत्येक आर्यांचा-सद्गृहस्थांचा परमधर्म आहे." असा वेदांचा गौरव करीत त्यांचे महत्त्व महर्षि दयानंदांनी स्वामी विवेकानंदांच्या अगोदरच पटवून दिले आहे. पण हा उल्लेख कांही गणेश उदावंतांच्या लेखातून आलेला नाही. ही त्यांना माहितीच नसली पाहिजे किंवा

जाणीवपूर्वक दुर्लक्ष केले असले पाहिजे. जे कांही असेल ते असेल! पण वेदांची जी चित्रे बनविण्यात आली आहेत, त्याला आधार असणे अत्यंत जरुरीचे आहे. आधार नसल्यास ती मनमानी होईल व अशा मनमानीपणाला कांहीच अर्थ उरणार नाही. आधार शोधायचा कसा ? आधार तर वेदांतूनच शोधावा लागेल. जगातील सर्वात प्राचीन ग्रंथ हे वेदच आहेत. वेदाच्या अगोदरच दुसरा कोणताही ग्रंथ नाही, हे पौर्वात्य व पाश्चिमात्य विद्वानांनी आणि प्राचीन व अर्वाचीन विचारवंतांनी मान्य केले आहे. त्यामध्ये कसलेच दुमत नाही. वेद हाच सर्वप्रथम ग्रंथ व वेदाची वैदिक संस्कृत भाषा हीच सर्व प्रथम भाषा. म्हणजेच प्रथम वेद ज्ञान ग्रंथापासूनच जगातील सर्व इतर ग्रंथात ज्ञान गेलेले आहे व प्रथम वैदिक संस्कृत भाषेपासूनच जगातील सर्व भाषा बनल्या आहेत. हे तर कोणालाही नाकारता येत नाही. हे तर खरे आहेच! सध्या आपला विचार वेदांच्या चित्राच्या आधाराबद्दल चाललेला आहे.

ऋग्वेदाची मंत्र संख्या १०,५८९, यजुर्वेदाची मंत्र संख्या १,९७५, सामवेदाची मंत्र संख्या १,८७५ व अथर्व वेदाची मंत्र ५,९७७. अशी एकूण चार वेदांची मंत्र संख्या २०,४१६ (वीस हजार चारशे सोळा) आहे. वेद मंत्र म्हणजे सत्य अर्थज्ञानपूर्वकचे शब्द समूह. शब्द हा मुखाचा (वाणीचा), बोलण्याचा व कानाचा-ऐकण्याचा विषय आहे. वेद हे सृष्टीच्या आरंभी मानवांना मिळालेले ईश्वरीय ज्ञान आहे. ईश्वर(परमात्मा) हा अनंत आहे. तो सांत नाही. तोच सृष्टी निर्माता, पालक व संहर्ता आहे. सृष्टी संचालक आहे. तो निराकार आहे. तो सर्वव्यापक म्हणजे सर्वत्र अंतर्बाह्य व्यापक आहे. जीवात्मा व प्रकृती व्याप्य आहेत. अशा प्रकारे प्रकृती, जीवात्मे व परमात्मा या तिन्हींचा व्याप्य-व्यापक संबंध म्हणजेच विश्व! यात जीवात्मा व परमात्मा हे दोन्हीही निराकार असल्यामुळे ते साकार बनू शकत नाहीत. कारण साकार व निराकार हे दोन्ही परस्पर विरुद्ध आहेत. म्हणून हे दोन्हीही नेहमीच निराकार राहतात. ते केंव्हाच साकार बनत नाहीत. प्रकृती मात्र साकार आहे. ती निराकार नाही. म्हणून एकच वस्तू निराकार व तीच साकार ही बनते, असे कधीच घडत नसते. हे समजून घेण्यासाठीच वेदांचा अभ्यास करणे आवश्यक आहे. म्हणून चारही वेदांचे मंत्र शिकणे व शिकविणे आणि ऐकणे व ऐकविणे म्हणजेच वेदांचा अभ्यास करणे गरजेचे असल्यामुळेच महर्षी स्वामी दयानंद सरस्वती महाराजांनी आर्य समाजाच्या तिसऱ्या नियमात ही गोष्ट नमूद केली आहे व आर्य समाजी लोक त्याप्रमाणे वेदांचा अभ्यासही करतात. ते वेदांची चित्रे बनवित

नाहीत व चित्रांची पूजा करीत नाहीत. प्रा.डॉ.अजीत देव यांनी त्यांच्या संग्रहात जी ४२ चित्रे अथवा गणेश उदावंत यांनी त्यांच्या उक्त लेखात जी चौकोणात चार वेदांची चार चित्रे दाखविली आहेत, त्यापैकी एकही चित्र चार वेदांच्या एकूण २०,४१६ मंत्रापैकी कोणत्याच मंत्राच्या आधारावर बनलेली नाहीत. ही बाब बहुतेक प्रा.डॉ.अजीत देव किंवा गणेश उदावंत या दोघांनाच माहित असावीत, असे वाटते. कारण उक्त लेखात त्यांनी चार वेदांपैकी कोणत्याही वेदमंत्राची साक्ष नोंदलेली नाही. फक्त चित्रेच दाखविली आहेत. वेदमंत्राचा आधार न दाखविता मनमानी पणाने ही वेदांची चित्रे आहेत व याच्या पूजापाठाने वेदज्ञान प्राप्ती व मार्गदर्शन मिळू शकते, असे कसे म्हणता येईल ? लक्षण व प्रमाणांच्या आधारावर कोणतीही गोष्ट सिद्ध होत असते. 'नुसते हे असे आहे', असे म्हटल्याने 'वास्तविक ते तसेच आहे' हे सिद्ध होत नाही. म्हणून म्हटले आहे की, **"लक्षणप्रमाणाभ्यां वस्तुसिद्धिः न तु प्रतिज्ञामात्रेण।"**

सावरगाव येथील चतुर्वेदेश्वर धाम मध्ये देवघरात पूजल्या जाणाऱ्या वेदमूर्तींच्या चित्रामुळे जर वेदांचे ज्ञान प्राप्त होत असेल, तर खांद्यावर नांगर घेतलेल्या अथवा शेतात नांगर हानीत असलेल्या किंवा पेरणी करीत असलेल्या शेतकऱ्याचे चित्र काढून ते समोर ठेवून त्याचे ध्यान-पूजा-उपासना केल्यास अन्नधान्य प्राप्ती होवू शकेल काय? जर असे घडू लागले तर ढगातून पाणी पडत असलेले चित्र, जलाशय-नदी-नाले, विहीरी पाण्याने भरून डबडब झालेली चित्रे काढून त्यांची पूजा केल्यास चोहोकडे पाणीच पाणी होऊन ३-४ वर्षापासून पडलेला पाण्याचा दुष्काळ नाहीसा होईल ना ! जर असे होत असेल तर असे का करु नये ? नाही नाही ! हे कदापीही शक्य नाही !! वेदांची चित्रे तयार करुन ती पूजल्याने कांहीच होणार नाही. वेदमंत्रांचा अर्थांसह अभ्यासच करावा लागेल व ती शिकवण जीवनात आचरणातच आणावी लागेल. असे केले तरच वेदाभ्यासकांना तरणोपाय होईल. अन्यथा वेदांची मनमानी चित्रे तयार करुन त्यांच्या पूजापाठाने कांहीच साध्य होणार नाही. यासाठीच आर्य समाजाने वेदाभ्यासासाठी मुलांची व मुलींची वेगवेगळी गुरुकुले व पाठशाळा अनेक ठिकाणी उघडल्या आहेत व तेथे सर्व मुले-मुली वेदाभ्यास व इतरही अभ्यास करतात व आपल्या जीवनाचे सोने करुन घेतात. प्रा.डॉ.अजीत देव यांनी त्यांच्या सर्वेक्षणात याची कोठेच नोंद घेतली नाही. यामुळे त्यांच्या या पक्षपाती वर्तनाचा खेद वाटतो.

- महर्षि दयानंद धाम, घटांग्रा
(व्हाया राणी सावरगाव)
जि.परभणी मो.९४२१८६७८१५

www.thearyasamaj.org

काव्यातून मोलाचा मार्मिक उपदेश...!

सरळ मार्ग सोडूनी माणसा, काट्याने तू जावू नको
ज्या संगतीने दुर्गुण वाढे, संगत त्यांची धरु नको
संसारामध्ये गुंग होवूनी, भोग विलासी बनू नको
नर जन्मामध्ये येवूनी प्राण्या, प्रभू स्मरणाला विसरु नको
द्वारी तुझीया आला भिकारी, विन्मुख त्याला लावू नको
गरीब-दुःखी अंध-पंगुना, सहाय्य करण्या चुकू नको
कर्ज कुणाचे बुडवू नको रे, ठेव कुणाची दाबू नको
गहाण कुणाचे डुबवू नको रे, कधी स्वस्थ तू बसू नको
न्याय नितीने मिळवी पैसा, अनीतीने तू कमवू नको
श्रीमंतीची वेळ आली तरी, भलते-सलते बोलू नको
आई-बापांना तुच्छ समजूनी, अपमानास्पद बोलू नको
बोल तयाचे तुझ्या हिताचे, झिडकाऊनी तू लावू नको
बालपणी जे कष्ट सोसले, जाणीव त्यांची विसरु नको
निंदा नालस्ती करु नको रे, मने तयांची दुखवू नको
माता-पिता हे दैवत समजुनी, वंदन करण्या लाजू नको
आशीर्वाद तू घेण्यासाठी, शरम कुणाची धरु नको
परनारी या माता-भगीनी, पाप-वासना मनी धरु नको
वेश्येला तू जवळ बसवूनी पतिव्रतेला छळू नको
विद्यार्थ्यांनो गुरुजनांना कमी प्रतीचे लेखू नका
विद्या शिकवूनी मनुष्य बनविती, जाणीव त्यांची विसरु नका
अंगी नम्रता सदा असावी, कोणासंगे भांडू नका
चोरी कुणाची करु नको रे, अबला दुःखी करु नको
चहाडी, चुगली करुणी माणसा, फुट कुणामध्ये पाडू नको
नोकरी कुणाची तरी परंतु, सत्य बोलणे तू सोडू नको
सट्टा, लॉटरी, जुगार, मटका, नशेचा खेळ खेळू नको
मद्यपान व मांसाहार तू कधीही सेवन करु नको
हे मी केले ते मी केले, असे गर्वाने तू बोलू नको
क्षणार्धामध्ये उलथून पाडील, प्रभू लीला तू विसरु नको

(हे गीत सभेचे भजनोपदेशक पं.प्रतापसिंह चौहान शाळा-महाविद्यालयात मोठ्या उत्साहाने गातात.)

अवैदिक विचारांशी तडजोड नको

- डॉ.ब्रह्ममुनी(सभाप्रधान)

पाच हजार वर्षांच्या अंध:कारमय युगानंतर महर्षि स्वामी दयानंद सरस्वतींच्या अपार त्याग व परिश्रमाने वैदिक तत्त्वज्ञान आम्हास पुन्हा प्राप्त झाले आहे. ईश्वराच्या आज्ञेनुसार स्वामीजींनी आपले सर्वस्व वेदज्ञानाच्या प्रचार व प्रसारासाठी समर्पित केले. स्वत:चा मोक्ष मार्ग सोडून संपूर्ण जगाला वेदामृत पाजण्यासाठी त्यांनी तन-मन अर्पिले. आपल्या '**कृण्वन्तो विश्वमार्यम्**' म्हणजेच संपूर्ण जगाला श्रेष्ठ मानव बनवा, या स्वप्नपूर्तीसाठी मुंबईत आर्य समाजाची स्थापना केली. मानवतेला आधार मानून या संस्थेचे १० नियम बनविले. या नियमात व संस्थेच्या सिद्धांतामध्ये कुठेही संकीर्णतेला थारा नव्हता. मानवनिर्मित मत-संप्रदाय (धर्म) व जातीभेद यांपासून सर्वत: दूर केवळ वैदिक मानवतेला केंद्रस्थानी बनवून आर्य समाजाचा विस्तार करण्यासाठी त्यांनी व त्यांच्या अनुयायांनी अहर्निश प्रयत्न केले. आजही जगात आर्य समाज ही ईश्वरीय ज्ञान-वेदांचे तत्त्वज्ञान समाजाच्या सर्वस्तरात रुजविणारी पवित्र संस्था असल्याचा सर्वमान्य दृष्टिकोन प्रसिद्ध आहे. शास्त्रामध्येही 'आर्य: ईश्वरपुत्र:' असे प्रतिपादन केले आहे.

असे असतांना आपण आपल्या पवित्र अशा मातृसंस्थेच्या विचारांविरुद्ध कृती का म्हणून करावी ? कांही केले तरी आपले सिद्धांत व विचार सोडता कामा नयेत. वेदांची सर्वोच्च विचारसरणी आत्मसात करण्यावर आपण व्यक्ती म्हणून कमी पडत असलो किंवा हे विचार आचरणात आणणे आपणास कठिण वाटत असले तरी आम्ही 'सार्वजनिक जीवनात' आपण या विशुद्ध वैदिक विचारांना अग्रक्रम दिला पाहिजे. पण कांही केल्या या विचारांचा वसा सोडू नये. प्रत्येक आर्यांचे कर्तव्य आहे की, आपण परमेश्वराचा अमृतपुत्र व प्रतिनिधी मानून ही विचारसरणी तळागळातील लोकांपर्यंत पोहोचविण्यासाठी मनसा, वाचा व कर्मणा कटिबद्ध राहावयास हवे. काळाची पावले ओळखून आर्य समाजाची आज संपूर्ण जगाला व साऱ्या मानवमात्राला फार गरज आहे. तेंव्हा वेदांचे विशुद्ध विचार 'आहे त्या शुद्ध स्वरुपात' सर्वांपर्यंत नेण्यास आम्ही आज तत्पर असावे. सैद्धांतिक दृष्टीने वैचारिक रक्षणाबरोबरच प्रत्येकाने आपल्या शारीरिक, मानसिक, आत्मिक पातळीवर विकास साधत सामाजिक व राष्ट्रीय विकासात योगदान देण्यास सज्ज राहावे.

प्रत्येक आर्य कार्यकर्त्याने आपले

व्यक्तिगत जीवन शुद्ध,पवित्र व आदर्श बनवित आपली आर्यत्वाची प्रतिमा टिकवून ठेवण्यास उद्युक्त असावे. वैदिक विचारांची आज पूर्वीपेक्षा ही जास्त गरज आहे. सध्याच्या युगात व्यक्तिगत, कौटुंबिक व सामाजिक समस्या वाढल्याने माणूस अशांत, चिंताग्रस्त आणि दु:खी बनत आहे. भौतिक सुखसुविधा व साधने उपलब्ध असतांनाही समाज दिवसेंदिवस दु:खाचे जीवन कंठत आहे. अशा परिस्थितीत आर्य समाजाची शिथिलता वेदनादायी ठरते. यास्तव आर्य समाजाच्या प्रत्येक कार्यकर्त्याने इतर अवैदिक, सांप्रदायिक व मनुष्यकृत जातिभेदांपासून दूर राहून त्यांचेशी तडजोड न करता मानवता, सृष्टिविज्ञान व ईश्वराची सर्वकाल-सर्वदेश कल्याणमयी विचारसरणी-स्वत:मध्ये आचरणात आणावी व दीपस्तंभाप्रमाणे जीवन जगावे'

आर्य सभेच्या वेबसाईट निर्मितीचे कार्य सुरु - सहकार्य करावे

सध्याचे जग तंत्रज्ञानावर आधारित आहे. देशातील सर्व सरकारी, निमसरकारी, सामाजिक व धार्मिक संस्था नव्या तंत्रज्ञानाचा वापर करीत प्रगती आहेत. अशात महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधी सभा ही संस्था देखील या आधुनिक तंत्रज्ञानाच्या माध्यमाने सुविकसित व्हावी, या दृष्टीकोनातून सभेची वेबसाईट बनविण्याचे काम सध्या सभेच्या पदाधिकाऱ्यांनी हाती घेतले आहे.

सभेची स्थापना ५ मार्च १९७७ साली झाली. तेंव्हापासून आजपर्यंत या संस्थेचा कार्यविस्तार कशा पद्धतीने वाढत गेला? वैदिक धर्माच्या प्रचार व प्रसारासाठी कोणकोणते उपक्रम राबविण्यात आले? आजपर्यंतचे सभेचे पदाधिकारी, त्यांच्याकडून झालेले कार्य, सभेच्या अंतर्गत आर्य समाजांची सूची, त्या-त्या आर्य समाजांचा आजपर्यंतचा इतिहास, सध्याचे सभेचे पदाधिकारी आणि आर्य समाजांचे पदाधिकारी व कार्यकर्ते या सर्वांचे मोबाईल क्रमांक, पत्ते तसेच राज्यातील विद्वान, लेखक, पुरोहित, प्रचारक आदींनी आजपर्यंत केलेल्या कार्याचे विवरण इत्यादी सर्व माहिती राज्यातील आर्य समाजांनी सभेकडे पाठवावी.

येत्या कांही दिवसात हे कार्य पूर्ण व्हावे, असा सभेचा मानस आहे. तरी सर्वांनी माहिती पाठवून सहकार्य करावे, ही विनंती.(मुदखेड जि.नांदेड येथे प्रांतीय सभेच्या पार पडलेल्या त्रैमासिक अंतरंग बैठकीत एकमुखाने हा निर्णय घेण्यात आला.)

- माधवराव देशपांडे

मंत्री, महाराष्ट्र आ.प्र.सभा, मो.९८२२२९५५४५

उत्सव वृत्तांत

गुंजोटीत वेदप्रकाश बलिदान उत्सव प्रेरणादायी

'बलिदानाने राष्ट्रभक्तीचे स्फुलिंग पेटले' -पं.आचार्य सानंदजी

'मातृभूमीच्या रक्षणासाठी प्राणार्पण करणारे शूरवीर आर्य बलिदानी हुतात्मा वेदप्रकाश यांच्या क्रांतिकारी जीवनज्योतीने अनेक भूमिपुत्रांमध्ये देशभक्तीचे स्फुलिंग पेटले व आर्यसमाजाचा इतिहास प्रेरक बनला. देशातील तरुण पीढीने या शुरवीराचा तेजस्वी लढाऊ इतिहास डोळ्यासमोर ठेऊन राष्ट्रीय, सामाजिक व धार्मिक कार्यासाठी तत्पर राहावे' असे आवाहन वैदिक विद्वान पं.आचार्य सानंदजी (पानीपत) यांनी केले. या बलिदान दिन समारंभात सहभागी अनेक आर्यजनांनी आपल्या प्रिय आर्यवीरास श्रद्धासुमने समर्पित केली.

गुंजोटी या ऐतिहासिक गावी दि.२, ३ व ४ डिसेंबरला हैद्राबाद स्वातंत्र्य संग्रामातील पहिले हुतात्मे वेदप्रकाशजी यांचा बलिदान दिवस विविध प्रेरणादायी कार्यक्रमांनी साजरा झाला. आर्य समाज व गावकऱ्यांतर्फे आयोजित या कार्यक्रमाकरिता वैदिक व्याख्याते म्हणून हरियाणातील पानिपत येथून आचार्य पं.सानंदजी व भजनीक म्हणून दिल्लीचे पं.दिनेशदत्त आर्य यांना आमंत्रित करण्यात आले होते. पं.सानंदजींच्या ब्रह्मत्वाखाली तिन्ही दिवशी सकाळी व संध्याकाळी यज्ञ, प्रवचन व भजनाचे कार्यक्रम पार पाडले. यज्ञात यजमान म्हणून सर्वश्री नारायण बेळमकर, विश्वनाथ कदेरे, मनोज हिरवे, लक्ष्मण हिरवे, कैलास शिंदे आदी आर्यजन सपत्नीक सहभागी झाले. यज्ञानंतर दोन्ही विद्वानांनी विविध आध्यात्मिक, सामाजिक, राष्ट्रीय विषयांवर प्रभावशाली विचार मांडून श्रोत्यांना मंत्रमुग्ध केले.

देशपांडे गुरुजींचा हृद्य सत्कार

याच कार्यक्रमाच्या निमित्ताने स्वाध्यायशील व्यक्तिमत्त्व म्हणून सर्वपरिचित असलेले आणि जीवनभर नि:स्पृह वृत्तीने वेदप्रचार, सोळा संस्कार, यज्ञप्रसार, कन्या संस्कार शिबिराचे आयेजन आदींच्या माध्यमाने आर्यसमाजाची विचारसरणी जनसामान्यांपर्यंत पोहोचविण्यासाठी जीवन वाहिलेले वरिष्ठ आर्य कार्यकर्ते पं.दिनकरराव देशपांडे यांच्या जीवन व कार्याचा गौरव या कार्यक्रमात करण्यात आला. आमंत्रित विद्वान पं.सानंदजी, पं.दिनेशदत्त आर्य, गुंजोटी आर्य समाजाचे प्रधान पं.प्रियदत्त शास्त्री, मंत्री राजवीर शास्त्री व इतर पदाधिकाऱ्यांच्या हस्ते शाल, श्रीफळ व पुष्पहार प्रदान करुन त्यांचा सत्कार करण्यात आला. श्री देशपांडे यांनी महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधी सभेचे मंत्री म्हणून काम पाहिले आहे.

आपल्या हृद्य सत्काराला उत्तर देतांना श्री देशपांडे यांनी सर्वांप्रती कृतज्ञता व्यक्त केली. यावेळी त्यांनी गुंजोटी परिसरातील ग्रामीण भागात वेदप्रचारासाठी दरवर्षी अकरा हजार रुपयांची देणगी देण्याचा मनोदय जाहिर केला. यावेळी अन्य आर्य कार्यकर्त्यांनीही आपल्या भाषणातून श्री देशपांडे यांच्या कार्याचा गौरव केला.

गुंजोटी परिसरात वेदप्रचार :-

वेदप्रकाश बलिदान दिनाचे औचित्य साधून गुंजोटी आर्य समाजाच्या वतीने शेजारच्या गावातील शैक्षणिक संस्थांमध्ये विद्यार्थी जागृती अभियान राबविण्यात आले. खजगी येथील सिद्धेश्वर विद्यालय, कदेर येथील लोकमान्य टिळक विद्यालय यांसह गुंजोटीतील श्रीकृष्ण विद्यालय, बसवेश्वर विद्यालय आणि स्वामी विवेकानंद विद्यालयात आयोजित प्रबोधनपर कार्यक्रमात विद्वानांनी भजन व प्रवचनांच्या माध्यमाने विद्यार्थ्यांना बहुमोल असे मार्गदर्शन केले.

गावातून भव्य शोभायात्रा :-

दरम्यान बलिदान दिनानिमित्त गुंजोटीत आर्यजनांनी अशी शोभायात्रा काढली. श्रीकृष्ण विद्यालयाच्या प्रांगणातून निघालेल्या या शोभायात्रेत विद्वान, आर्य कार्यकर्त्ते, गावचे सरपंच, सदस्य व इतर प्रतिष्ठीत गावकरी, सामाजिक कार्यकर्त्ते, शिक्षक, प्राध्यापक व विद्यार्थी-विद्यार्थींनी बहुसंख्येने सहभागी झाले. बार्शीहून आलेले सोममुनिजी हे ही या शोभायात्रेत सहभागी झाले. महाराष्ट्र सभेचे भजनोपदेशक पं.प्रतापसिंहजी चौहान व इतरांनी शोभायात्रेत सादर केलेली प्रेरणादायी राष्ट्रीय जागृती भजने व जयघोषामुळे परिसर दुमदुमून गेला होता. लेझीम पथक, बँड पथक यांसह प्रेरक भजन व गीत गायनाने वातावरण आनंददायी व प्रफुल्लीत झाले.

सत्कार व दानयज्ञ :-

वेदप्रकाशजींच्या पावन स्मृती जपत गुंजोटीचे भूमिपुत्र व सोलापुरचे आर्यकार्यकर्ते श्री ॲड.देवेंद्र आगसे यांनी आपल्या आई-वडिलांच्या स्मरणार्थ आपल्या परिवाराच्या वतीने गावातील १२० गुणवंतांचा सत्कार केला. त्यासोबतच सामाजिक व वेदप्रचार कार्यात सहयोग देणाऱ्या गावातील २०आदर्श नागरिकांचा सत्कार केला. तसेच आर्य समाजाचे प्रधान पं.प्रियदत्तजी शास्त्री यांच्या प्रेरणेतून पानिपत येथील दानदात्यांच्या वतीने २५० चादरी, स्वेटर आदी वस्त्रांचे गरीब व्यक्तींना दान करण्यात आले.

कार्यक्रमाचे सुत्रसंचलन मंत्री श्री राजवीर शास्त्री यांनी केले तर आभार म्हाळप्पा दुधभाते यांनी मानले. कार्यक्रम यशस्वी करण्यासाठी विश्वनाथ कदेरे, संतोष दुधभाते, बबन आयनले, विष्णू खंडागळे, मोहन पाटील, विश्वनाथ महाजन, विलास पांचाळ, सत्यप्रकाश शिंदे, प्रियदत्त शास्त्री (प्रधान) आदींनी प्रयत्न केले.

www.thearyasamaj.org

स्मरण पत्रमहर्षी बाळशास्त्री जांभेकरांचे !

– प्रा.देवदत्त तुंगार

बाळशास्त्री जांभेकर यांनी ६ जानेवारी १८३२ रोजी 'दर्पण' हे नियतकालिक सुरु केले. ६ जानेवारी हा 'पत्रकार दिन' म्हणून पुरस्कारही दरवर्षी देण्यात येतो. त्यामुळे बाळशास्त्री जांभेकरांचे नाव अनेक पत्रकारांना माहित आहे. त्यांचे जन्मसाल इ.स.१८१० किंवा १८१२ असावे. त्यांचा मृत्यू १७ मे १८४६ रोजी झाला. म्हणजे साधारण उणेपुरे ३५ वर्षांचे आयुष्य या कर्तबगार पत्रकारांच्या वाट्याला आले. पण अल्पायुष्य लाभूनही जांभेकरांनी विविध क्षेत्रात जी अतुलनीय कामगिरी बजावली, ती आश्चर्य वाटेल अशीच आहे. 'दर्पण' हे प्रारंभी पाक्षिक म्हणून व नंतर साप्ताहिक म्हणून प्रकाशित झाले. 'दर्पण' या साप्ताहिकाप्रमाणेच जांभेकरांनी 'दिग्दर्शन' नावाचे मासिकही काही काळ चालविले. रीडर्स डायजेस्ट स्वरुपाचे हे मासिक म्हणजे अमृत 'श्रीयुत' या स्वरुपाचा पूर्व अवतार होय.

कर्ता समाजसुधारक :–

बाळशास्त्री जांभेकर यांनी वेद, बायबल, कुराण यांचा तौलनिक अभ्यास केला होता. ते वेदाभिमानी होते. त्यामुळेच स्त्री संबंधीचा त्यांचा दृष्टिकोन, पुरोगामी होता. स्त्रियांचा शिक्षण दिले पाहिजे, सतीप्रथा, बालहत्या बंद झाल्या पाहिजेत, विधवा-विवाह व्हावेत आदी सुधारणांचे ते सक्रिय पुरस्कर्ते होते. शुद्धी कार्यक्रमही त्यांनी राबविला. **'समान अधिकार देण्यासाठी वेदामध्ये अनेक प्रमाणे आहेत'**, असे प्रतिपादन करुन बाळशास्त्री जांभेकरांनी पुढे लिहिले आहे की, **'स्त्रियांनी विद्या, कला शिकाव्यात'** तसेच स्त्रियांना वेदाधिकारही आहे. यज्ञाचे समयी अग्नीस आहुती देते समयी स्त्रियांनी वेदमंत्र म्हणून आहुती द्यावी लागते, मुख्य देवांगना त्यांची नावे शचि, म्हणजे इंद्रांची पत्नी, यमी म्हणजे यमाची भगिनी त्याच्या अधिकारी आहेत.

स्त्रियांना वेदकाली विद्यासंपादनाचा अधिकार होता. तो पुन्हा प्रस्थापित केला पाहिजे, असे बाळशास्त्री म्हणतात. श्रीपत शेषाद्रि या तरुण मुलास ख्रिस्ती करण्यात आले होते. त्याला पुन्हा हिंदु धर्मात घेण्यासाठी जांभेकरांनी शंकराचार्य व पुरोगामी धर्मपंडितांनी मदत घेतली व श्रीपतीला पुनश्च 'स्वधर्मी' आणले.

(लेखकाच्या 'महाराष्ट्रातील पत्रमहर्षी' ग्रंथातून साभार.)

– 'निरामय', कलामंदिरामागे,नांदेड

मो. ९३७२५४१७७७

www.thearyasamaj.org

वार्ता विशेष... सोलापुरात दयानंद निर्वाण दिवस साजरा

सोलापुर येथील आर्य समाजात दि.३० ऑक्टोबर रोजी महर्षी दयानंद यांचा १३३ वा निर्वाण दिवस आणि दीपावली पर्व हे कार्यक्रम उत्साहात संपन्न झाले. या निमित्त पं.राजवीरजी शास्त्री यांच्या पौरोहित्याखाली **'महापुरुष प्रंशसन व शारदीय नवसस्येष्टी यज्ञ'** पार पडला. यावेळी यजमान म्हणून स्थानिक दयानंद महाविद्यालया(डी.ए.व्ही.) चे प्राचार्य वि.पा. उबाळे, प्रा.आशुतोष पाटील, अशोक खत्री आणि प्रा.वेदप्रकाश बिराजदार व प्रा.आशीष घनाते हे सपत्नीक उपस्थित होते.

यज्ञानंतर झालेल्या मुख्य समारंभात आर्य समाजाच्या वतीने डी.ए.व्ही. चे नूतन प्राचार्य श्री विजयकुमार उबाळे व इतिहास विषयाचे नवनियुक्त प्रा.साईनाथ कबाडे यांचा सत्कार करण्यात आला. सत्कारास उत्तर देताना यावेळी प्राचार्य उबाळे यांनी महर्षी दयानंदांच्या जीवन व कार्यावर प्रकाश टाकला व आपल्या कारकिर्दीत महाविद्यालयात दयानंदांच्या विचार व कार्याची विद्यार्थ्यांना ओळख करुन देण्याचा पूर्णपणे प्रयत्न करण्याचे आश्वासन दिले. ते म्हणाले- 'महाविद्यालयाच्या प्रत्येक कार्यक्रमात आमंत्रित पाहुण्यांचे **'सत्यार्थ प्रकाश'** ग्रंथ भेट देऊन स्वागत करण्याचे आम्ही ठरविले आहे. याशिवाय सोलापुर विद्यापीठात महर्षी दयानंदांचे अध्यासन सुरु करण्याचा आमचा मानस आहे.' यावेळी प्रा.कबाडे यांनी स्वामी दयांनदांच्या सामाजिक, राष्ट्रीय व शैक्षणिक विचारांवर प्रकाश टाकून आदर्श राष्ट्र निर्मितीसाठी त्यांच्या विचारसरणीची गरज असल्याचे प्रतिपादन केले. प्रारंभी श्री सुभाष गायकवाड व सौ.गायत्री भोसले यांनी मधुर भजने सादर केली. कार्यक्रमाचे सूत्रसंचालन मंत्री श्री शरद होमकर तर आभार प्रधान भाऊसाहेब सुतार यांनी मानले.

संग्राम दिनी डॉ.लोखंडे यांचे परळीत व्याख्यान

'प्राण तळहाती घेऊन अनेक क्रांतिकारक देशभक्तांनी हैद्राबाद स्वातंत्र्य संग्रामाचा लढा यशस्वी केला. मानवतेच्या रक्षणासाठी व मातृभूमीच्या सेवेपोटी अनेकांनी आपले आयुष्य समर्पित केले. त्या थोर क्रांतिवीरांची जीवनगाथा फारच संघर्षमय आहे. त्यांपासून प्रेरणा घेऊन युवकांनी राष्ट्रकार्यासाठी तत्पर राहावे, असे आवाहन मुक्ती लढ्याचे अभ्यासक प्रा.डॉ.चंद्रशेखर लोखंडे यांनी केले.

परळी येथील वैद्यनाथ महाविद्यालयात दि.१७ सप्टेंबरला हैद्राबाद(मराठवाडा) मुक्ती संग्राम दिन साजरा करण्यात आला. त्याप्रसंगी श्री लोखंडे प्रमुख पाहुणे म्हणून

बोलत होते. अध्यक्षस्थानी प्राचार्य डॉ.आर.के.इप्पर होते. लोंखडे यांनी आपल्या मार्गदर्शनपर भाषणात हैद्राबाद संग्रामाचा इतिहास कथन केला. या लढ्यात आर्य समाजाने दिलेल्या योगदानाचा त्यांनी गौरवपूर्ण शब्दात उल्लेख केला. कार्यक्रमाच्या प्रास्ताविकातून प्रा.डॉ.शेप यांनी मुक्ती संग्रामाचे महत्त्व विषद केले. तर अध्यक्षीय समारोपात डॉ.इप्पर यांनी हैद्राबादच्या लढ्याचा उल्लेख इतिहासातील सोनेरी पान असा केला. सूत्रसंचालन प्रा.गडम यांनी तर आभार डॉ.लांडगे यांनी केले.

दयानंदांच्या विचारांनीच सर्वांगिण प्रगती शक्य

– रमेश ठाकूर यांचे प्रतिपादन

'दूरगामी व्यापक चिंतनाच्या आधारे स्वामी दयानंदांनी मांडलेला विशुद्ध वेदांचा विचार हा जगात निर्माण झालेल्या विविध प्रश्नांवर मुलभूत उपाय असून या विचारांनीच सर्वांगिण प्रगती साधू शकते', असे प्रतिपादन औरंगाबाद येथील विचारवंत श्री रमेश ठाकूर यांनी केले.

दीपावली पर्व व स्वामी दयानंदांच्या १३३ व्या स्मृति दिनानिमित्त परळी येथील आर्य समाजात आयोजित विशेष प्रबोधनपर कार्यक्रमात श्री ठाकूर प्रमुख वक्ते म्हणून बोलत होते. अध्यक्षस्थानी आर्य समाजाचे प्रधान व माजी नगराध्यक्ष श्री जुगलकिशोर लोहिया हे होते. तर विशिष्ट अतिथी म्हणून भगवद्‌गीतेचे प्रचारक श्री संपतराव गिते उपस्थित होते. आपल्या मार्गदर्शनपर भाषणात श्री ठाकूर यांनी स्वामी दयांनदांच्या जीवन व कार्यावर ओघवत्या शब्दात प्रकाश टाकला. ते म्हणाले – 'महर्षी दयानंदांनी तर्कशक्ती, डोळस अंधश्रद्धा व वैज्ञानिक दृष्टीकोनाद्वारे सामाजिक, राष्ट्रीय सुधारणा घडवून आणण्यासाठी प्रयत्न केला. त्यांनी सांगितलेली वेदांची शिकवणूक मानवनिर्मित धर्म व जाती-पातीच्या भिंतींना तोडणारा होता. धार्मिक अंधश्रद्धा व रुढी-परंपरा यांना नेस्तनाबुत करुन खरा अध्यात्माचा मार्ग त्यांनी जगाला दिला. आस्तिक व नास्तिक या प्रवाहातील कमतरता दूर करुन विशुद्ध स्वरुपातील अध्यात्मिक विचार प्रवाह त्यांनी निर्माण केला.'

श्री संपतराव गिते यांनी श्री स्वामी दयानंद हे खऱ्या अर्थाने वेदज्ञानाचा शुद्ध विचार देणारे महान संत होते, असे सांगितले. तर अध्यक्षीय समारोपात जुगलकिशोर लोहिया यांनी महर्षी दयानंदांच्या विचारांमुळे आजच्या सद्यस्थितीत निर्माण झालेल्या अनेक प्रश्नांची उकल होऊ शकते' असे प्रतिपादन केले. प्रारंभी पं.प्रशांतकुमार शास्त्री यांच्या पौरोहित्याखाली झालेल्या यज्ञात सर्वश्री ओमप्रकाश हुलगुंडे, उदय तिवार व

जयकिशोर दोडिया हे यजमान म्हणून सपत्नीक सहभागी झाले. कार्यक्रमाच्या सुरुवातीला संतोष आर्य, योगीराज भारती, सुशिलाबाई गुट्टे, वेदव्रत आर्य आदींनी भजने सादर केली.

यावेळी महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधीचे सभेचे प्रधान डॉ.ब्रह्ममुनी, संस्थेचे सचिव उग्रसेन राठौर यांच्यासह आर्य कार्यकर्त्ते बहुसंख्येने उपस्थित होते.प्रास्ताविक श्री लक्ष्मणराव आर्य (हुलगुंडे) यांनी केले, तर आभार जयकिशोर दोडिया यांनी मानले.सुत्र संचलन रुपेश आर्य यांनी केले.

हदगावला विद्यालयीन वक्तृत्व स्पर्धा संपन्न

निवघ्याची साक्षी प्रथम, हादगावच्या वैष्णवी व शीतल द्वितीय व तृतीय

प्रांतीय सभेच्या वतीने आर्यसमाज हादगावच्या सहकार्याने यावर्षीची स्व.विठ्ठलराव बिराजदार (तांभाळकर) स्मृती राज्यस्तरीय माध्यमिक विद्यालयीन वक्तृत्व स्पर्धा हादगाव येथे संपन्न झाली.

दि.२७ नोव्हेंबर २०१६ रोजी 'महर्षि दयानंदचे शैक्षणिक विचार' या विषयावर घेण्यात आलेल्या वक्तृत्त्व स्पर्धेत परिसरातील विविध शाळांच्या २३ विद्यार्थ्यांनी उत्साहात भाग घेतला.

या स्पर्धेत निवघा येथील राणी लक्ष्मीबाई विद्यालयाची विद्यार्थिनी कु.साक्षी विनोद पाईकराव हिने प्रथम क्रमांकाचे पारितोषिक पटकाविले, तर हादगावच्या पंचशील विद्यालयाची विद्यार्थिनी कु.वैष्णवी दिलीपराव वाघमारे हिने द्वितीय व विवेकानंद विद्यालयाची विद्यार्थिनी कु.शितल देविदास कदम हिने तृतीय क्रमांक मिळविला. तसेच अनुसूचित जाती शासकीय मुलींच्या शाळेची विद्यार्थिनी कु.मंजुषा कृष्णाजी भालेराव या विद्यार्थीनीस उत्तेजनार्थ बक्षिस प्राप्त झाले.

विजेत्या स्पर्धकांना आर्य समाजाचे वयोवृद्ध कार्यकर्त्ते व हादगावभूषण श्री बद्रीनारायणजी आर्य (तोष्णिवाल), स्वा.सै.नागोरावजी हाळदे, मंत्री प्रभाकर देशमुख, प्रधान शेषराव शिंदे आदींच्या हस्ते अनुक्रमे रु.१५००/-(प्रथम), रु.१०००/- (द्वितीय), ७५०/- (तृतीय) तसेच प्रमाणपत्र व वैदिक साहित्य देऊन गौरविण्यात आले.

यावेळी आर्य कार्यकर्त्यांनी मनोगत व्यक्त केले. कार्यक्रमास सभा प्रतिनिधी आर्यमुनिजी, उपप्रधान श्रीमती कमलादेवी आर्य(झंवर), उपमंत्री वाय.के.कदम, अविनाश देशमुख, राजु काळे यांच्यासह विविध मान्यवर उपस्थित होते. कार्यक्रमाचे संचलन जनार्दन देशमुख यांनी केले तर आभार शेषराव शिंदे यांनी मानले. प्रारंभी पं.सोगाजीराव घुन्नर यांनी भजन सादर केले.

सोलापुरला श्रद्धानन्द बलिदान दिन

सोलापुर येथील आर्य समाजात अमर बलिदानी हुतात्मा स्वामी श्रद्धानंद व हुतात्मा रामप्रसाद बिस्मील यांचे बलिदान दिन प्रेरक कार्यक्रमांनी साजरी झाले.

याप्रसंगी पं.वेदसुमन भोसले यांच्या पौरोहित्याखाली बृहद् यज्ञ संपन्न झाला. यज्ञानंतर झालेल्या व्याख्यानात पं.राजवीर शास्त्री यांनी स्वामी श्रद्धानंदजी यांच्या जीवनावर प्रकाश टाकला. मुन्शीराम सारखी सामान्य व्यक्ती महर्षि दयानंदांच्या संपर्कामुळे महात्मा बनली व आर्य समाजाच्या प्रचार व प्रसार कार्यासाठी त्यांनी आपले सर्वस्व समर्पित केले. केवळ भारतातच नव्हे तर संपूर्ण जगात गुरुकुलाच्या शिक्षण पद्धतीचा श्रीगणेशा करुन आर्य समाजाचे नावलौकिक वाढविण्यात ते अग्रणी ठरले.

पं.रामप्रसाद बिस्मिल यांच्यासारख्या क्रांतिकारी देशभक्ताने ब्रिटीशांच्या जुलमी सत्तेविरुद्ध आंदोलन पुकारले व यशस्वी लढा दिला. अशा थोर बलिदानी महापुरुषामुळे देशाचा इतिहास तेजोमय झाला आहे, असेही ते म्हणाले. यावेळी आर्य समाजाचे पदाधिकारी व कार्यकर्ते उपस्थित होते.

रामनगरमध्ये प्रा.होळीकरांचे व्याख्यान

स्वामी श्रद्धानंद बलिदान दिनानिमित्त लातूरच्या रामनगर आर्य समाजात देखील प्रबोधनपर कार्यक्रम पार पडला. प्रसिद्ध भाषातज्ज्ञ प्रा.ओमप्रकाश होळीकर यांनी हुतात्मा स्वामी श्रद्धानंद यांच्या क्रांतीकारी जीवन व कार्यावर प्रकाश टाकला.

यावेळी ते म्हणाले- 'स्वामी श्रद्धांनद म्हणजे आर्य समाजाच्या इतिहासातील सोनेरी पानं आहे. मुंशीराम सारखी विविध दुर्गण, दोष व व्यसनात फसलेली व्यक्ती संत सान्निध्याने महात्मा, योगी व तपस्वी बनते. हा ज्वलंत इतिहास सध्याच्या तरुणांसाठी प्रेरणेचा दीपस्तंभ आहे. या अग्निपुरुषाचे आदर्श डोळ्यासमोर ठेऊन सर्वांनी राष्ट्रनिर्मितीच्या यज्ञात तत्पर राहावे.'

यावेळी प्रधान श्री शंकरराव मोरे यांनी आर्य समाजाच्या प्रचार व प्रसारासाठी कार्यकर्त्यांनी तत्पर राहावे असे आवाहन केले. प्रारंभी पं.नारायण शास्त्री यांच्या पौरोहित्याखाली यज्ञ संपन्न झाला. प्रास्ताविक प्रान्तिय सभेचे उपप्रधान श्री राजेंद्र दिवे यांनी तर संचलन मंत्री ज्ञानकुमार आर्य यांनी केले. कार्यक्रमास सर्वश्री माणिकराव भोसले, दयानंद बडे, रामेश्वर राऊत, अनंत लोखंडे, श्रीमती कमलबाई भोसले आदी उपस्थित होते.

www.thearyasamaj.org

सौ.व श्री चिल्ले गौरव वक्तृत्त्व स्पर्धा उत्साहात

सौ.कलावतीबाई व स्वा.सै.श्री. मन्मथअप्पा चिल्ले (आनंदमुनी) गौरव राज्यस्तरीय आंतरमहाविद्यालयीन वक्तृत्व स्पर्धा यावर्षी सोलापुर येथे पार पडली. आर्य समाज सभागृहात आयोजित या स्पर्धेत जवळपास २० महाविद्यालयीन विद्यार्थ्यांनी सहभाग घेऊन "महर्षी दयानंदांनी सांगितलेले ईश्वराचे स्वरुप" या विषयावर विचार व्यक्त केले. या स्पर्धेत वालचंद महाविद्यालयाची कु.उत्कृर्षा उद्धवराव थोरात हिने प्रथम, डी.ए.बी. महाविद्यालयाची कु.मोहिनी पवार हिने तृतीय क्रमांक पटकावुन पारितोषिके जिंकली. या विजेत्या विद्यार्थ्यानींना अनुक्रमे रु.१५००/-(प्रथम), रु.१०००/- (द्वितीय) व रु.७५०/- (तृतीय) अशी बक्षीसे व वैदिक साहित्य प्रदान करुन गौरविण्यात आले. सहभागी अन्य स्पर्धकांना प्रमाणपत्रे व वैदिक ग्रंथ प्रदान करण्यात आले. या स्पर्धेला परीक्षक म्हणून श्री नंदकिशोरजी गांगजी व सौ.सुजात शास्त्री यांनी काम पाहिले. प्रा.गंगाधर बिराजदार यांनी सूत्रसंचालन केले, तर मंत्री शरद होमकर यांनी आभार मानले. स्पर्धेच्या सफलतेसाठी सर्वश्री प्रा.सुरेश बुरकुले, देवीदास उकिरडे, शरद दोशट्टी, केदार पुजारी, आदित्य सुद्धालकर, प्रशांत गायकवाड, विजय कार्यमोल, वेदसुमन भोसले, पं.राजवीर शास्त्री आदींनी प्रयत्न केले.

(शोकवार्ता) दिलीप दीक्षित यांना मातृशोक

परळी येथील आर्य समाजाचे सदस्य श्री दिलीप दीक्षित यांच्या मातु:श्री श्रीमती सुशिलाबाई मनोहरराव दीक्षित यांचे दि.१जानेवारी २०१७ रोजी सायं.६ च्या सुमारास वृद्धापकाळाने दु:खद निधन झाले. मृत्युसमयी त्या ८० वर्षे वयाच्या होत्या.

त्यांच्या पश्चात् आर्य कार्यकर्ते दिलीप व पेंटर प्रदीप यांच्यासह ५ मुले व १ कन्या, सुना, नातवंडे असा परिवार आहे. श्रीमती दीक्षित यांच्या पार्थिवावर श्री लक्ष्मणराव आर्य, वैद्य विज्ञानमुनिजी, नयनकुमार आचार्य, रंगनाथ तिवार आदींनी वैदिक पद्धतीने अंतिम संस्कार केले. तिसऱ्या दिवशी श्री सोममुनिजी यांच्या पौरोहितत्याखाली दीक्षित कुटुंबात शांतियज्ञ करण्यात आला. यावेळी श्रद्धानंद गुरुकुल आश्रमातील मुनिवृंद सर्वश्री विज्ञानमुनी, आर्यमुनी, गोपालमुनी, अमृतमुनी, कर्ममुनी, माता सेवायती आदी उपस्थित होते.

दिवंगत आत्म्यास भावपूर्ण श्रद्धांजली!

www.thearyasamaj.org

-० आर्य समाज परली में ऋषि दयानन्द निर्वाणोत्सव ०-

समारोह के प्रमुख वक्ता आर्य विद्वान् पं.रमेशजी ठाकूर का सम्मान करते हुए आर्य समाज परली के प्रधान श्री जुगलकिशोरजी लोहिया।

मार्गदर्शन करते हुए पं.ठाकुरजी। मंच पर विराजमान है सर्वश्री डॉ.ब्रह्ममुनिजी, संपतराव गित्ते, लोहियाजी एवं रुपेश आर्य ।

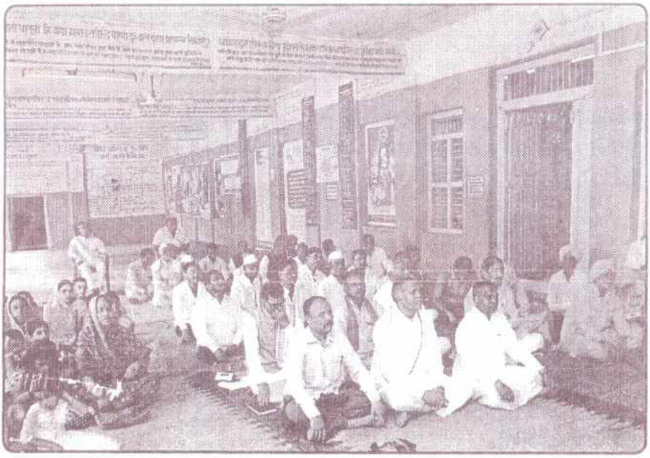

ऋषि निर्वाण दिवस कार्यक्रम में सम्मिलित श्रोतागण ।

www.thearyasamaj.org

परिवारों के प्रति सच्ची निष्ठा, सेहत के प्रति जागरुकता शुदधता एवं गुणवत्ता, करोडों परिवारों का विश्वास, यह है एम.डी.एच.का इतिहास जो पिछले ९३ वर्षों से हर कसौटी पर खरे उतरे हैं - जिनका कोई विकल्प नहीं। जी हां यही हैं आपकी सेहत के रखवाले

MDH मसाले

असली मसाले सच-सच

लाजवाब खाना ! एम.डी.एच. मसाले हैं ना !

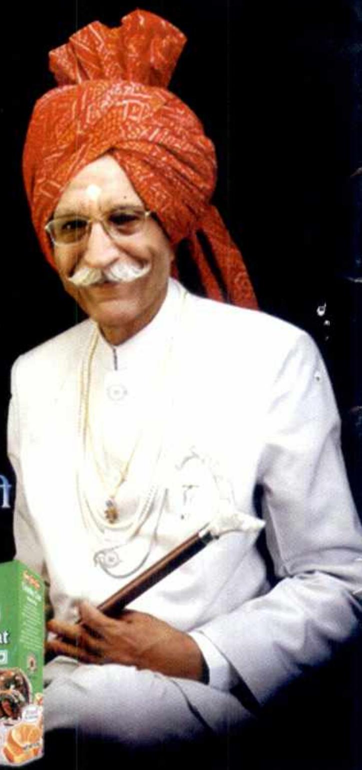

आर्य जगत के दानवीर भामाशाह
महर्षि दयानन्द के अनन्य भक्त
महाशय धर्मपालजी

MAHASHIAN DI HATTI LTD.
Regd.Office : MDH House,
9/44 Kirti Nagar, New Delhi-110015,
Ph : 25939609,. 25937987
Fax : 011-25927710
E-mail : mdhltd@vsnl.net
Website : www.mdhspices.com

REG.No.MAHBIL/2007/7493*Postal No.L/Beed/18/2015-17

सेवा में,
श्री

प्रेषक -
मन्त्री, महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा,
आर्य समाज, परली-वैजनाथ
पिन ४३१ ५१५ जि.बीड (महाराष्ट्र)

यह मासिक पत्र सम्पादक व प्रकाशक श्री मन्त्री, महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा वैदिक प्रिंटर्स, परली वैजनाथ इस स्थलपर मुद्रित कर 'महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा' के संपर्क कार्यालय 'आर्य समाज, परली वैजनाथ ४३१ ५१५ जि.बीड (महाराष्ट्र)' इस स्थान से प्रकाशित किया ।

श्रमशील किसान, सरल, धार्मिक, श्रद्धालू, सेवाभावी एवं सुस्वभावी व्यक्तित्व तथा अपने पुत्र व कन्याओं को सुसंस्कारित करनेवाले आदर्श पिता

स्व.श्री रंगनाथ सीतारामजी जाधव

डी.टी.पी. जॉबवर्क के लिए उपयुक्त स्थान

उत्कृष्ट डिझाइनों में सब प्रकार की रंगीन छपाई के कार्य अल्प दरों में समय पर किये जानेवाला मराठवाडा का प्रसिद्ध मुद्रण स्थान

भारत ऑफसेट प्रिंटर्स

स्टेशन रोड, परली-वैजनाथ जि.बीड- ४३१ ५१५

✲ मुख्य संचालक ✲

श्री हनुमान रंगनाथरावजी जाधव

Mob.9422592579 / E-mail : bharatoffsetparli12@gmail.com